Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 5

अंक 13

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

1 शअबान 1441 हिजरी कमरी 26 अमान 1399 हिजरी शमसी 26 मार्च 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

बड़े बड़े अंग्रेज़ अनुसंधान कर्ता इस बात को यह बात स्वीकार करनी पड़ती है कि इस्लाम की सच्चाई की रूह ही इतनी मज़बूत है कि जो दूसरी क़ौमों को इस्लाम स्वीकार करने पर मजबूर कर देती है।

उपदेश सय्यदना हज़रत

महान आचरण बड़ी भारी करामत है

मैंने कल या परसों वर्णन किया था कि महान आचरण बड़ी भारी करामत है जो आदत से हट कर बातों को भी शंकित कर सकता है। जैसे अगर आज चान्द का दो टुकड़े होने का मोजिज़ा हो तो यह खगोल विज्ञान के माहिर और साईंस के चाहने वाले शीघ्र इस को कुसूफ़ ख़ुसूफ़ (चान्द तथा सूर्य ग्रहण) के क़िस्मों में दाख़िल कर के इस की अज़मत को कम करना चाहेंगे और जो पुराना मोजिज़ा अब पेश करते हैं तो उसे क़िस्सा क़रार देते हैं। जैसे यही कुसूफ़ ख़ुसूफ़ देखो जो रमज़ान में हुआ और जो महदी के निशानों में से एक आकाशीय निशान था। मैंने सुना है कि कुछ लोग कहते हैं कि यह तो खगोल विज्ञान की दृष्टि से साबित था कि रमज़ान में ऐसा हो। यह कह कर मानो वह इस हदीस की जो इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम की तरफ़ से है , सम्मान कम करना चाहते हैं मगर ये बेफकूफ इतना नहीं सोचते कि नबुव्वत हर एक आदमी नहीं कर सकता। नबुव्वत पेशगोई करने को कहते हैं। अर्थात हर एक का यह काम नहीं कि वे पेशगोईयां करता फिरे। पैग़ंबर ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि महदवी्यत तथा मसीही्यत का दावा करे वाले के ज़माना में यह कुसूफ़ ख़ुसूफ़ रमज़ान में होगा और सृष्टि के आरम्भ आज तक कभी नहीं हुआ। अत: अगर अक्ली तौर पर किसी किस्म की शंका हो तो ऐसे विरोधियों को चाहिए कि वे तारीख़ी तौर पर इस पेशगोई की अज़मत को कम कर दिखाऐं। अर्थात किसी ऐसे वक़्त का पता दें जबकि रमज़ान में कुसूफ़ ख़ुसूफ़ इस तरीके पर हो कि पहले किसी मुद्दई ने दावा भी किया हो और जिस बात का दावा किया हो इस बात के सबूत में रमज़ान के कुसूफ़ ख़ुसूफ़ की पहले किसी नबी के ज़माना में पेशगोई भी की गई हो मगर यह सम्भव नहीं कि कोई दिखला सके।

मेरी अत: इस घटना के वर्णन से सिर्फ यह थी कि ख़वारिक़ पर तो किसी ना किसी रंग में लोग आरोप कर देते हैं और इस को टालना चाहते हैं लेकिन अख़लाक़ी हालत एक ऐसी करामत है जिस पर कोई उंगली नहीं रख सकता और यही वजह है कि हमारे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सबसे बड़ा और मज़बूत चमत्कार अख़लाक़ ही का दिया गया। जैसे फ़रमाया : اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ (अल-क़लम: 5) यूं तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हर एक किस्म के ख़वारिक़ क़ुव्वत सबूत में समस्त अंबिया अलैहिमुस्सलाम के चमत्कारों से अपनी ज़ात में बढ़े हुए हैं मगर अख़लाक़ी एजाज़ का नम्बर इन सबसे अव्वल है जिसकी तुलना दुनिया की तारीख़ नहीं बतला सकती और न प्रस्तुत कर सकेगी।

मैं समझता हूँ कि हर एक आदमी जो अपने बुरे आचरण को छोड़कर घृणित आदतों को छोड़ कर के अच्छे आचरण को लेता है इस के लिए वही करामत है। जैसे अगर बहुत ही सख़्त तेज़ मिज़ाज और ग़ुस्सा करने वाला इन बुरी आदतों को छोड़ता है और नर्मी और क्षमा को धारण करता है या कंजूसी को छोड़कर सख़ावत और हसद की बजाय हमदर्दी हासिल करता है तो बेशक यह करामत है और ऐसा ही अपनी प्रशंसा और ख़ुद-पसंदी को छोड़कर जब विनय और विनम्रता धारण करता है तो यह विनय ही करामत है अत: तुम में से कौन है जो नहीं चाहता कि करामात वाला बिन जाए। मैं जानता हूँ हर एक यही चाहता है , तो बस यह एक स्थायी और ज़िन्दा करामत है कि इन्सान आचरण की हालत को ठीक करे क्योंकि यह ऐसी करामत है जिसका प्रभाव कभी नष्ट नहीं होता बल्कि लाभ दूर तक पहुंचता है। मोमिन को चाहिए कि ख़ल्क़ और ख़ालिक़ के नज़दीक करामत वाला हो जाए। बहुत से शराबी और अय्याश ऐसे देखे गए हैं जो किसी चमत्कारपूर्ण निशान को मानते नहीं हुए लेकिन आचरण की हालत को देखकर उन्होंने भी सिर झुका लिया है और स्वीकार करने के अतिरक्ति और मानने के इलावा दूसरी राह नहीं मिली। बहुत से लोगों की जीवनी में इस बात को पाओगे कि उन्होंने आचरण की करामात ही को देखकर सच्चे धर्म को स्वीकार कर लिया।

(हज़रत अक़दस यह तक़रीर निहायत जोश और प्रभावपूर्ण तरीक़ से फ़र्मा रहे थे कि कुछ सिख फ़क़ीराना लिबास में आए। नशा में मदहोश थे। उन्होंने आकर ऐसी बकवास की कि संभव था इस बहश्ती मज्लिस में भंग पड़े, मगर हमारे सच्चे इमाम अलैहिस्सलाम ने अपने व्यावहारिक नमूना से यह आचरण की करामत जिसकी हिदायत फ़र्मा रहे थे, दिखाई। जिसका प्रभाव श्रोताओं पर ऐसा पड़ा कि अक्सर उनमें चिल्ला चिल्ला कर जोश के कारण रो पड़े। वे शररात करने वाले अन्त में पुलिस के हाथ जाकर पिटे और उनका नशा हिरन हो गया। ऐडीटर)

मेरी बातों को नष्ट न करें

अत: मैं फिर पुकार कर कहता हूँ और मेरे दोस्त सुन रखें कि वे मेरी बातों को नष्ट न करें और उनको सिर्फ एक क़िस्सा कहने वाले या दास्तान सुनाने वाले की कहानियों ही का रंग न दें बल्कि मैंने ये सारी बातें निहायत दिल की गहराई और सच्ची हमदर्दी से जो फ़ितरत में मेरी रूह में है,की हैं। उनको दिल की गहराई से सुनो और उन पर अनुकरण करो।

हाँ ख़ूब याद रखू और इस को सच समझो कि एक दिन अल्लाह तआला के हुज़ूर जाना है। अत: अगर हम उम्दा हालत में यहां से कूच करते हैं तो हमारे लिए मुबारक और ख़ुशी है वर्ना बहुत ख़तरनाक हालत है। याद रखो कि जब इन्सान बुरी हालत में जाता है तो दूर का मकान उस के लिए यहीं से शुरू हो जाता है। अर्थात नज़ा की हालत ही से इस में परविर्तन शुरू हो जाता है। अल्लाह तआला फ़रमाया है

اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ؕ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى

(ताहा :75) अर्थात जो आदमी मुजरिम बन कर आएगा उस के लिए एक

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

इस्लाम झूठ बोलने की हरगिज़ इजाज़त नहीं देता

क्या आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने विशेष अवस्था में हालात में झूठ बोलने की इजाज़त दी

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों की रोशनी में इस आम ग़लतफ़हमी को दूर करना

सल्तनत मदीना के मुआहिदा बनू नज़ीर और बनू क़ुरैज़ा का वादा तोड़ने की वजह से उनके ख़िलाफ़ कार्रवाई का ज़िक्र

इख़लास तथा वफ़ा के पैकर बदरी सहाबी हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ी अल्लाह अन्हो की मुबारक सीरत का वर्णन

फ़ित्ना फैलाने वाले और जोश दिलाने वाले यहूदी सरदार सलाम बिन अबी अलहकीक उल-मारूफ़ अबू राफ़े के क़त्ल और इस के कारणों का विस्तारपूर्वक वर्णन

इस्लामाबाद के आरम्भिक आबादी में निस्वार्थ सेवा करने वाले सिलसिला के पुराने ख़ादिम आदरणीय ताज दीन साहिब की वफ़ात पर उनका ज़िक्र ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 14 फरवरी 2020 ई. स्थान - मस्जिद 'बैयतुल फ़ुतूह मोर्डन सिर्रे (यू. के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुत्बा में हज़रत मुहम्मद बिन मसलेमह रज़ि के बारे में वर्णन हुआ था और कुछ हिस्सा रह गया था जो आज इन्शा अल्लाह वर्णन होगा। कअब बिन अशर्फ़ के क़तल के अन्तर्गत में यह वर्णन हुआ था कि हज़रत मुहम्मद बिन मसलेमह रज़ि ने उसे बहाने से घर से दूर ले जा कर क़तल किया तो क्या यह झूठ नहीं है? इसी तरह यह भी वर्णन हुआ था कि एक हदीस के हवाले से कुछ उल्मा के नज़दीक तीन अवसरों पर झूठ की इजाज़त है, लेकिन हक़ीक़त में यह ग़लत धारणा है या हदीस की ग़लत व्याख्या है जो कि तीन अवसरों पर ग़लत वर्णन को या झूठ को जायज़ क़रार देती है। बहरहाल मैंने उस वक़्त इस की वज़ाहत कर दी थी जो सीरत ख़ातमन्नबय्यीन में वर्णन हुई है लेकिन इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी अपनी किताब 'नूरुल क़ुरआन' मैं वज़ाहत से रोशनी डाली है जो एक ईसाई के आरोप के जवाब में आप ने वर्णन फ़रमाई है। इस का कुछ हिस्सा, इस में से कुछ हिस्से मैं अभी वर्णन करूँगा जिससे इस बात की बिलकुल वज़ाहत हो जाती है कि इस्लाम झूठ बोलने की हरगिज़ इजाज़त नहीं देता। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ईसाई के आरोप के जवाब को वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि एक यह आरोप है कि

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीन जगह झूठ बोलने की इजाज़त दी है और अपने धर्म को छुपा लेने के लिए क़ुरआन में साफ़ हुक्म दे दिया है मगर इंजील ने ईमान को छुपाने की इजाज़त नहीं दी। यह आरोप है। इस के जवाब में आप फ़रमाते हैं कि स्पष्ट हो कि जितना सच्चाई की स्थापना के लिए क़ुरआन शरीफ़ में ताकीद है मैं हरगिज़ स्वीकार नहीं कर सकता कि इंजील में इस का कण मात्र भी हो ।

फिर आप फ़रमाते हैं कि क़ुरआन शरीफ़ ने झूठ बोलने को बुत की उपास्ना के बराबर ठहराया है जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है। فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ अर्थात बुतों की गन्दगी और झूठ की गन्दगी से परहेज़ करो। फिर एक जगह फ़रमाता है। يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ۔ अर्थात हे ईमान वालो इन्साफ़ और सच्चाई पर स्थापित हो जाओ और सच्ची गवाहियों को अल्लाह के लिए अदा करो यद्यपि तुम्हारी जानों पर उनका नुक्सान पहुंचे या तुम्हारे माँ बाप और तुम्हारे करीबी रिश्तेदार इन गवाहियों से नुक़्सान उठावें। आप इस आलोचक को सम्बेधित हो कर फ़रमाते हैं कि अब हे नाख़ुदा तरस ज़रा इंजील को खोल और हमें बतला कि सच्चाई के लिए ऐसी ताकीद इंजील में कहां है?

फिर उसी ईसाई को जिसका नाम फ़तह मसीह था सम्बोधित कर के फिर आप लिखते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीन जगह झूठ बोलने की इजाज़त दी है मगर यह आपको अपनी जहालत की वजह से ग़लती लगी है और असल बात यही है कि किसी हदीस में झूठ बोलने की हरगिज़ इजाज़त नहीं बल्कि हदीस में तो यह शब्द हैं कि اِنْ قُتِلْتَ وَاُحْرِقْتَ अर्थात सच को मत छोड़ यद्यपि तू क़तल किया जाए और जलाया जाए। फिर जिस हालत में क़ुरआन कहता है कि तुम इन्साफ़ और सच मत छोड़ो यद्यपि तुम्हारी जानें भी इस से नष्ट हों और हदीस कहती है कि यद्यपि तुम जलाए जाओ और क़तल किए जाओ मगर सच ही बोलो तो फिर अगर फ़र्ज़ के तौर पर कोई हदीस क़ुरआन और सहीह हदीसों के विरुद्ध हो तो वह सुनने योग्य नहीं होगी क्योंकि हम लोग इसी हदीस को क़बूल करते हैं जो सहीह हदीसों और क़ुरआन करीम के विरुद्ध न हो। आप फ़रमाते हैं कि हाँ कुछ हदीसों में तौरेह के जायज़ की तरफ़ इशारा पाया जाता है। अर्थात मस्लिहत के अधीन कुछ दो-अर्थों वाले शब्दों को वर्णन कर दिए। और इसी को नफ़रत दिलाने के उद्देश्य से झूठ के नाम से सम्बनधित किया गया है। और जब दो अर्थ वाली बात होती है तो इसी बात को मुख़ालिफ़ीन नफ़रत दिलाने के लिए झूठ के नाम से सम्बन्धित कर रहे हैं और फ़रमाया कि और एक जाहिल और बेफकूफ जब ऐसा शब्द किसी हदीस में बतौर तसामह के लिखा हुआ पाए अर्थात किसी को समझाने के लिए जब कोई लफ़्ज़ उस को आसान कर के प्रोयग किया जाता है। इस को तसामह के पाए तो शायद उस को हक़ीक़ी झूठ ही समझ ले क्योंकि वह इस क़तई फ़ैसले से बे-ख़बर है कि हक़ीक़ी झूठ इस्लाम में गन्दगी और हराम और शिर्क के बराबर है मगर तौरेह जो वास्तव में झूठ नहीं यद्यपि किज़्ब के रंग में ही मजबूरी के वक़्त अवाम के लिए इस का जवाज़ हदीस से पाया जाता है मगर फिर भी लिखा है कि अफ़ज़ल वही लोग हैं जो तौरेह से भी परहेज़ करें और तौरेह इस्लामी इस्तिलाह में इस को कहते हैं कि फ़ित्ना के भय से एक बात को छिपाने के लिए या किसी और मस्लिहत पर एक राज़ की बात छुपाने के उद्देश्य से ऐसी मिसालों और तरीकों में इस को वर्णन किया जाए कि अक़्लमंद तो इस बात को समझ जाये और नादान की समझ में न आए और इस का ख़्याल दूसरी तरफ़ चला जाए जो कहने वाले का आशय नहीं और ग़ौर करने के बाद मालूम हो के जो कुछ कहने वाले ने कहा वह झूठ नहीं बल्कि केवल सच्चाई है और कुछ भी झूठ की इस में मिलावट न हो और न दिल ने एक ज़र्रा भी झूठ की तरफ़ मेल क्या हो। आप फ़रमाते हैं कि जैसा कि कुठ हदीसों में दो मुस्लमानों में सुलह कराने के लिए या अपनी बीवी को किसी फ़ित्ना और घरेलू नाराज़गी और झगड़े से बचाने के लिए या जंग में अपने तरीके दुश्मन से छुपाए रखने के उद्देश्य से और दुश्मन को और तरफ़ झुका देने की नीयत से तौरेह का जवाज़ पाया जाता है मगर इस तरह उस के बहुत सी हदीसें दूसरी भी हैं जिनसे मालूम होता है कि तौरेह उच्च स्तर के तक़्वा के विरुद्ध है और बहरहाल खुली खुली सच्चाई बेहतर है अगर उस की वजह से क़त्ल किया जाए और मारा जाए।

फिर आप फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यथा संभव इस से बचे रहने का हुक्म किया है ताकि बात का अभिप्राय अपनी ज़ाहिरी अवस्था में भी झूठ से सद्दश्य न हो। फिर आप फ़रमाते हैं कि जब मैं देखता हूँ कि जनाब सय्यदुल मुरसिलीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जंग उहद में अकेले होने की हालत में नंगी तलवारों के सामने कह रहे थे कि मैं मुहम्मद हूँ, मैं नबी अल्लाह हूँ, मैं इब्न अब्दुल मुतलिब हूँ।

यहां यह स्पष्ट कर दूं कि जब किताब छपी थी तो उसी किताब के हाशिए में लिखा है कि यह भूल से लिखा गया है। यह घटना जंग हुनैन की है। जंग उहद की नहीं। हालाँकि अब मुझे हमारे रिसर्च सेल ने ही 'सीरत का हवाला निकाल कर भिजवाया है जिसमें लिखा है कि यह शब्द आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुनैन और उहद दोनों जंगों में फ़रमाए थे। इसलिए अब इशाअत का जो शोबा है, नज़ारत इशाअत भी है इन को भी इस हाशीए को भविष्य में निकाल देना चाहिए। अक्सर मैं ने देखा है कि कई बार जल्दबाज़ी से काम लेकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलसलो वस्सलाम के जो शब्द हैं उनका मतलब निकालने के लिए या आसानी पैदा करने के लिए हाशिए में लिख दिया जाता है यह ग़लती थी या भूल हो गई। हालाँकि बहुत सारी रिसर्च करने की ज़रूरत है, ध्यान देने की ज़रूरत है। इसलिए बहरहाल अब यह हवाला तो मेरे सामने आ गया था और बड़ा स्पष्ट लिखा हुआ है कि यह शब्द हुनैन और उहद दोनों अवसरों पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाए थे। बहरहाल यह वज़ाहत इस बारे में भी हो गई।

अब आगे आप फ़रमाते हैं कि अगर किसी हदीस में तौरेह को बतौर तसामह झूठ के लफ़्ज़ से वर्णन भी किया गया हो तो यह सख़्त जहालत है। अर्थात अलफ़ाज़ को आसान करने के लिए ,समझाने के लिए अगर कहीं झूठ का लफ़्ज़ लिख भी दिया है तो फ़रमाया कि यह सख़्त जहालत है कि कोई शख़्स उस को हक़ीक़ी किज़्ब पर महमूल करे जबकि क़ुरआन और सहीह हदीसों में सहमति से झूठ को सख़्त हराम और गन्दगी ठहराते हैं और उच्च सत्र की हदीसें तौरेह के मसला को खोल कर वर्णन कर रही हैं तो फिर अगर फ़र्ज़ भी कर लें कि किसी हदीस में बजाय तौरेह के झूठ का शब्द आ गया हो तो नऊज़ बिल्लाह इस से मुराद वास्तविक झूठ क्योंकर हो सकता है बल्कि उस के मानने के निहायत बारीक तक़्वा का ये निशान होगा जिसने तौरेह को झूठ की अवस्था में समझ कर बतौर भूल के झूठ का शब्द प्रयोग किया हो। हमें क़ुरआन और सहीह हदीसों की पैरवी करनी ज़रूरी है। अगर कोई बात इस के विरुद्ध होगी तो हम उस के वह अर्थ हरगिज़ क़बूल नहीं करेंगे जो विरुद्ध हों।

फिर आप फ़रमाते हैं क़ुरआन ने झूठों पर लानत की है और इसी तरह फ़रमाया है कि झूठे शैतान के साथी होते हैं और झूठे बेईमान होते हैं और झूठों पर शयातीन नाज़िल होते हैं और सिर्फ यही नहीं फ़रमाया कि तुम झूठ मत बोलो बल्कि यह भी फ़रमाया है कि तुम झूठों की संगत भी छोड़ दो और उनको अपना यार तथा दोस्त मत बनाओ और ख़ुदा से डरो और सच्चों के साथ रहो और एक जगह फ़रमाता है कि जब तू कोई कलाम करे तो तेरा कलाम केवल सच्चाई हो। ठट्ठे के तौर पर हंसी के तौर पर भी इस में झूठ न हो।

(उद्धरित नूरुल क़ुरआन नम्बर 2 रुहानी ख़ज़ायन भाग 9 पृष्ठ 402 से 408)

(सीरते अलहलिबया भाग 2 पृष्ठ 310 बाब ज़िक्र मुग़ाज़य सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ग़ज़वा उहद प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 2002 ई)

यह तो इस के हवाले से वर्णन हो रहा था जो पहले वर्णन हुआ था। वज़ाहत हो गई। अब मैं हज़रत मुहम्मद बिन मसलेमह रज़ि के बाक़ी ज़िन्दगी के हवाले से आगे चलता हूँ। जब बनू नज़ीर ने धोखे से आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर चक्की का पाट गिरा कर क़तल करने की कोशिश की तो अल्लाह तआला ने वह्य के माध्यम से उस की ख़बर आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कर दी थी इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तेज़ी से उठे मानो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किसी ज़रूरत के लिए उठे हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना तशरीफ़ लाए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जाने के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा कराम रज़ि भी कुछ देर इंतिज़ार के बाद आप के पीछे मदीना आ गए। जब सहाबा कराम रज़ि मदीना पहुंचे तो उन्हें मालूम हुआ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुहम्मद बिन मसलेमह रज़ि को बुलाया है। हज़रत अबू बकर रज़ि ने निवेदन की हे रसूलुल्लाह!आप उठकर चले आए और हमें इल्म न हुआ। आप ने फ़रमाया कि यहूदी मेरे साथ धोखा करना चाहते थे। अल्लाह तआला ने मुझे बता दिया तो मैं उठकर चला आया। अल्लाह तआला ने इस बारे में यह आयत नाज़िल फ़रमाई कि

يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللهِ عَلَيْكُمْ إِذْ هَمَّ قَوْمٌ أَنْ يَّبْسُطُوْا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاتَّقُوا اللهَ وَعَلَى اللهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ

(अल-मायद11)

कि हे ईमान वालो तुम अल्लाह की अपने ऊपर नेअमत याद करो जो उस वक़्त हुई थी जब एक क़ौम ने इरादा किया था कि तुम पर हमला करे तब उसने इस क़ौम के हाथ तुम से रोक दिए और अल्लाह का तक़्वा धारण करो और मोमिनों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

बहरहाल हज़रत मुहम्मद बिन मसलेमह रज़ि को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यहूद के पास भिजवाया और इस की घटना इस तरह वर्णन हुई है कि जब हज़रत मुहम्मद बिन मसलेमह रज़ि आपकी सेवा में हाज़िर हुए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बनू नज़ीर के यहूदियों के पास जाओ। उन्हें कहो मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तुम्हारे पास भेजा है कि तुम मेरे शहर से निकल जाओ। वह यहूदियों के पास गए क्योंकि उन्होंने यह साज़िश की थी और अपने वादा का ध्यान नहीं किया था, इस को तोड़ा था इसलिए उनकी सज़ा यह थी कि शहर से निकल जाएं। वह यहूदियों के पास गए। उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे तुम्हारे पास एक पैग़ाम देकर भेजा है लेकिन मैं इस का वर्णन तब तक नहीं करूँगा जब तक मैं तुम्हें एक ऐसी बात न याद करा दूं जिसे तुम अपनी मज्लिसों में याद किया करते थे। एक पुरानी बात का ज़िक्र किया कि वह मैं तुम्हें याद कराना चाहता हूँ। फिर यहूद ने पूछा कि वह क्या बात है? हज़रत मुहम्मद बिन मसलेमह रज़ि ने कहा कि मैं तुम्हें इस तौरात की क़सम देता हूँ जिसे अल्लाह तआला ने मूसा पर नाज़िल किया क्या तुम जानते हो कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बिअसत से पहले मैं तुम्हारे पास आया था तुमने अपने सामने तौरात खोल रखी थी तुमने मुझे इस महफ़िल में कहा था कि हे मुस्लिमा! अगर तुम चाहते हो कि हम तुम्हें खाना पेश करें तो हम तुम्हें खाना पेश करते हैं। अगर तुम चाहते हो कि हम तुम्हें यहूदी बनाएँ तो हम तुम्हें यहूदी बना देते हैं । हज़रत मुहम्मद बिन मसलेमह रज़ि कहते हैं कि मैंने उस वक़्त कहा था कि मुझे खाना खिलाओ, मुझे यहूदी न बनाओ। अल्लाह की कसम मैं कभी भी यहूदी नहीं बनूँगा। फिर घटना हुई कि तुमने मुझे एक थाली में खाना दिया और तुम लोगों ने मुझे कहा था कि तुम यह धर्म सिर्फ इसलिए क़बूल नहीं करते क्योंकि यह यहूदियों का मज़हब है। अर्थात यहूदियों ने मुहम्मद बिन मुस्लिमा को कहा कि तुम इसलिए स्वीकार नहीं करते कि यह यहूदियों का मज़हब है। मानो तुम वह हनीफ़ीत चाहते हो जिसके बारे में तुम ने सुन रखा है। अबू आमिर राहिब तो इस का मिस्दाक़ नहीं है। अर्थात जो सुन रखा है कि नबी आने वाला है। और अबू आमिर राहिब जो है वह उस का मिस्दाक़ नहीं बन सकता। फिर उन्होंने कहा कि अब तुम्हारे पास वह हस्ती आएगी जो मुस्कुराने वाली है, जो जंग करने वाली है। इस की आँखों में सुर्ख़ी है। वह यमन की तरफ़ से आएँगे। वह ऊंट पर सवारी करेंगे। वह चादर ओढेंगे। वह थोड़े पर क़नाअत करेंगे। उनकी तलवार उनके कंधे पर होगी। वह हिक्मत के साथ गुफ़्तगु करेंगे मानो वह तुम्हारे रिशतेदार हैं । अल्लाह की क़सम! तुम्हारी इस बस्ती में अब छीना-झपटी होगी और क़तल होगा और मुसला होगा। यह सुनकर यहूद ने कहा कि हम इसी तरह कहा करते थे। ये सारी बातें उनको याद कराईं कि तुम इस तरह कहा करते थे लेकिन ये वह नबी नहीं है अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वह नबी नहीं हैं। हज़रत मुहम्मद मसलेमह रज़ि ने कहा कि मैं अपने पैग़ाम से अब फ़ारिग़ हो चुका जो मैं तुम्हें याद कराना चाहता था। फिर आप ने अगली बात शुरू की कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भेजा है और आप ने फ़रमाया है कि तुम ने वह मुआहिदा तोड़ दिया है जिसे मैंने तुम्हारे लिए क़ायम किया था क्योंकि तुमने मुझे धोखा देने की कोशिश की है। हज़रत मुहम्मद बिन मसलेमह रज़ि ने यहूद को उनके इस इरादे की ख़बर दी जो उन्होंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में किया था और यह कि अमरो बिन जहाश कैसे छत पर चढ़ाता कि वह आप पर पत्थर गिरा दे । इस पर उन्होंने चुप साध ली और वे एक शब्द तक न बोल सके। फिर हज़रत मुहम्मद बिन मसलेमह रज़ि ने उन्हें कहा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है तुम मेरे इस शहर से निकल जाओ। मैं तुम्हें दस दिन की छूट देता हूँ उस के बाद जो इधर नज़र आया तो मैं इस की गर्दन उड़ा दूँगा। यहूद ने कहा हे मुस्लिमा!हम तो सोच भी नहीं सकते थे कि यह पैग़ाम औस क़बीला का कोई शख़्स लेकर आएगा। हज़रत मुहम्मद बिन मसलेमह रज़ि ने फ़रमाया अब दिल तबदील हो चुके हैं। कुछ दिन यहूद तैयारी करते रहे। उनकी सवारियां ज़ूजदर मुक़ाम पर थीं वे लाई गईं। ज़ूजदर क़बा की तरफ मदीना से छ: मील की दूरी पर एक चरागाह है वहां उनके जानवर चरा करते थे। वही सवारियां थीं वे लाई गईं वहां से । उन्होंने बनू अशजा क़बीले से किराए पर ऊंट लिए और रवानगी की तैयारी मुकम्मल की। यह तारीख़ की किताब का उद्धरण है

(सबलुल हुद वर्रिशाद भाग 4 पृष्ठ 317 से 320 ग़ज़वा बनी नज़ीर दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत1993 ई)

(सबलुल हुद वर्रिशाद (अनुवाद) भाग 4 पृष्ठ 754 प्रकाशन ज़ावीया पब्लिश-

रज़ लाहौर 2013 ई) (मोअज्जमुल बुलदान भाग 2 पृष्ठ 132)

यहूदियों के व्यवहार की कि उनका व्यवहार किस तरह होता था ? एक जगह उस का वर्णन करते हुए जिस में बनू क़ुरैज़ा की ग़द्दारी की घटना है यद्यपि यह पहले हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि के अन्तर्गत मैं वर्णन हो चुका है लेकिन तारीख़ी लिहाज़ से यहां भी वर्णन कर देना ज़रूरी है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि लिखते हैं कि

''बनू क़ुरैज़ा का मामला तय होने वाला था। उनकी ग़द्दारी ऐसी नहीं थी कि नज़रअंदाज की जाती। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने' जंग ख़ंदक़ से ''वापस आते ही अपने सहाबा रज़ि से फ़रमाया :घरों में आराम न करो बल्कि शाम से पहले पहले बनू क़ुरैज़ा के क़िलों तक पहुंच जाओ और फिर आप ने हज़रत अली को बनू क़ुरैज़ा के पास भिजवाया कि वह उनसे पूछें कि उन्होंने मुआहिदा के ख़िलाफ़ यह ग़द्दारी क्यों की? बजाय इस के कि बनू क़ुरैज़ा शर्मिंदा होते या माफ़ी मांगते या कोई याचना करते उन्होंने हज़रत अी रज़ि और उनके साथियों को बुरा-भला कहना शुरू कर दिया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के ख़ानदान की औरतों को गालियां देने लगे और कहा हम नहीं जानते मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)क्या चीज़ हैं? हमारा उनके साथ कोई मुआहिदा नहीं है। हज़रत अली रज़ि उनका यह जवाब लेकर वापस लौटे तो इतने में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा रज़ि के साथ यहूद के क़िलों की तरफ़ जा रहे थे चूँकि यहूद गंदी गालियां दे रहे थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बीवीयों और बेटीयों के बारे में भी नापाक शब्द बोल रहे थे तो हज़रत अली रज़ि ने इस ख़्याल से कि आप को इन शब्दों के सुनने से कष्ट होगा अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह आप क्यों तकलीफ़ करते हैं हम लोग इस लड़ाई के लिए काफ़ी हैं। आप वापस तशरीफ़ ले जाएं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं समझता हूँ कि वे गालियां दे रहे हैं और तुम यह नहीं चाहते कि मेरे कान में वे गालियां पढ़ें। हज़रत अली रज़ि ने अर्ज़ किया कि हाँ हे रसूलुल्लाह बात तो यही है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया फिर क्या हुआ अगर वे गालियां देते हैं। मूसा नबी तो उनका अपना था इस को इस से भी ज़्यादा उन्होंने तकलीफ़ें पहुंचाई थीं। यह कहते हुए आप यहूद के क़िलों की तरफ़ चले गए मगर यहूद दरवाज़े बंद कर के क़िला बंद हो गए और मुस्लमानों के साथ लड़ाई शुरू कर दी यहां तक कि उनकी औरतें भी लड़ाई में शरीक हुईं। अत: क़िला की दीवार के नीचे कुछ मुस्लमान बैठे थे कि एक यहूदी औरत ने ऊपर से पत्थर फेंक कर एक मुस्लमान को मार दिया लेकिन कुछ दिन के घेराव के बाद यहूद ने यह महसूस कर लिया कि वह लम्बा मुक़ाबला नहीं कर सकते। तब उनके सरदारों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इच्छा की कि वह अबुल बाबा अन्सारी को जो उनके दोस्त और औस क़बीला के सरदार थे उनके पास भिजवाएं ताकि वह उनसे मश्वरा कर सकें। आप ने अबुल बाबा को भिजवा दिया। उनसे यहूद ने ये मश्वरा पूछा कि क्या मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस मांग को कि फ़ैसला मेरे सपुर्द करते हुए तुम हथियार फेंक दो, हम यह मान लें? अबोलबाबा ने मुँह से तो हाँ! लेकिन अपने गले पर इस तरह हाथ फेरा जिस तरह क़तल की अलामत होती है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस वक़्त तक अपना कोई फ़ैसला ज़ाहिर नहीं किया था मगर अबुल बाबा ने अपने दिल में यह समझते हुए कि उनके इस जुर्म की सज़ा' अर्थात जो मुख़ालिफ़ीन थे, मुआहिदा तोड़ने वाले यहूदी थे उनके इस जुर्म की सज़ा ''सिवाए क़तल के और क्या होगी। बग़ैर सोचे समझे इशारा के साथ उनसे एक बात कह दी जो आख़िर उनकी तबाही का कारण हुई। अत: यहूद ने कह दिया कि हम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़ैसला मान लेते तो दूसरे यहूदी क़बीलों की तरह उनको ज़्यादा से ज़्यादा यही सज़ा दी जाती कि उनको मदीना से निकाल दिया जाता मगर उनकी बदक़िस्मती थी। यहूद ने फ़ैसला नहीं माना और यह कहा कि अगर वे मान लेते तो यही होता कि उनको देश निकाला की सज़ा हो जाती मगर उनकी बदक़िस्मती थी कि ''उन्होंने कहा कि हम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़ैसला मानने के लिए तैयार नहीं बल्कि हम अपने हलीफ़ क़बीला औस के सरदार साद बिन मआज़ रज़ि का फ़ैसला मानेंगे। जो फ़ैसला वह करेंगे हमें स्वीकार होगा लेकिन इस वक़्त यहूद में मतेभद हो गया। यहूद में से कुछ ने कहा कि हमारी क़ौम ने ग़द्दारी की है और मुस्लमानों के व्यवहार से साबित होता है कि उनका मज़हब सच्चा है वे लोग अपना मज़हब तर्क कर के इस्लाम में दाख़िल हो गए। एक शख़्स अमरो बिन सुअदी ने जो इस क़ौम के सरदारों में से था अपनी क़ौम को बुरा भला कहा और कहा कि तुमने ग़द्दारी की है कि मुआहिदा तोड़ा है अब या मुस्लमान हो जाओ या जज़्या पर राज़ी हो जाओ। यहूद ने कहा न मुस्लमान होंगे ना जज़्या देंगे।' उनमें से अधिकतर यही थी ''कि इस से क़तल होना अच्छा है। फिर उस शख़्स ने उनसे कहा मैं तुमसे बरी होता हूँ। और यह कह कर वह क़िला से निकल कर बाहर चल दिया। जब वह क़िला से बाहर निकल रहा था तो मुस्लमानों के एक दस्ता ने जिसके सरदार मुहम्मद बिन मसलेमह रज़ि थे उसे देख लिया और उसे पूछा कि वह कौन है। उसने बताया कि मैं अमुक हूँ। इस पर मुहम्मद बिन मसलेमह रज़ि ने फ़रमाया

اَللّٰهُمَّ لَا تَحْرِمْنِیْ اِقَالَۃَ عَثَرَاتِ الْکِرَامِ

अर्थात आप सलामती से चले जाएं और फिर अल्लाह तआला से दुआ की इलाही मुझे शरीफ़ों की ग़लतियों पर पर्दा डालने के नेक काम से कभी महरूम ना करना। अर्थात यह शख़्स क्योंकि अपने कर्म पर और अपनी क़ौम के कर्म पर पछताता है तो हमारा भी अख़लाक़ी फ़र्ज़ है कि उसे माफ़ कर दें। इसलिए मैंने उसे गिरफ़्तार नहीं किया और जाने दिया है। ख़ुदा तआला मुझे हमेशा ऐसे ही नेक कामों की तौफ़ीक़ बख़्शता रहे। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस घटा का पचा चला तो आप ने मुहम्मद बिन मसलेमह रज़ि को डांटा नहीं' कुछ नहीं पूछा ''कि क्यों इस यहूदी को छोड़ दिया बल्कि उस के कर्म को सराहा''या प्रशंसा की।

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 282 से 284)

अत: मुस्लमानों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीम और तर्बीयत के अनुसार हमेशा इन्साफ़ का व्यवहार किया है

ख़ैबर वालों की जब शरारत हुई तो फिर उस की वजह से अबू राफ़े यहूदी का क़तल हुआ उस की घटना इस तरह है। और क़तल करने के लिए जो सहाबा की जमाअत भेजी गई थी इस में भी हज़रत मुहम्मद बिन मसलेमह रज़ि शामिल थे जिन्हों ने अबू राफ़े यहूदी को क़तल किया था। क़तल तो एक शख़्स ने किया था लेकिन बहरहाल वे जमाअत जो वहां गई थी उनमें यह शामिल थे। हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने इस घटना का विस्तार इतिहास से ले के इस तरह वर्णन की है कि

जिन यहूदी रईसों की फसाद फैलाने वाली और जोश दिलाने वाली हरत से5 हिज्री के आख़िर में मुस्लमानों के ख़िलाफ़ जंग एहज़ाब का ख़तरनाक फ़ित्ना पैदा हुआ था इस में से हुय्य बिन अख़्तब तो बनू क़ुरैज़ा के साथ अपने अन्जाम को पहुंच चुका था लेकिन सलाम बिन अबी अलहक़ीक जिसकी कुनिय्यत अबू राफ़े थी अभी तक ख़ैबर के इलाक़ा में इसी तरह आज़ादा औरा फित्ना फैलाने में व्यस्त था बल्कि एहज़ाब के अपमान से भरी नाकामी और फिर बनू करेज़ा के भयानक अन्जाम ने इस की शत्रुता को और भी ज़्यादा कर दिया था और चूँकि क़बीला ग़त्फ़ान का निवास ख़ैबर के क़रीब था और ख़ैबर के यहूदी और नजद के क़बीले आपस में मानो पड़ोसी थे इसलिए अब अबू राफ़े ने जो एक बहुत बड़ा व्यापारी और अमीर इन्सान था नियम बना लिया था कि नजद के वहशी और जंग करने वाले क़बीलों को मुस्लमानों के ख़िलाफ़ उकसाता रहता था और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शत्रुता में वह कअब बिन अशर्फ़ का पूरा पूरा मसील था। अत: इस ज़माना में जिसका हम ज़िक्र कर रहे हैं उसने ग़त्फ़ानियों को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ हमला करने के लिए बहुत बड़े माल से सहायता दी और तारीख़ से साबित है कि शअबान महीना में बनू सअद की तरफ़ से जो ख़तरा मुस्लमानों को पैदा हुआ था और इस के रोकथाम के लिए के लिए हज़रत अली की कमान में एक फ़ौजी दस्ता मदीना से रवाना किया गया था उस की तह में भी ख़ैबर के यहूदियों का हाथ था जो अबू राफ़े की क़ियादत में ये सब शरारतें कर रहे थे। मगर अबू राफ़े ने इसी पर बस नहीं की। इस की शत्रुता की आग मुस्लमानों के ख़ून की प्यासी थी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वजूद उस की आँखों में कांटा की तरह खटकता था। अत: अन्त में उसने यह तरीका धारण किया कि जंग एहज़ाब की तरह नजद के क़बीला ग़त्फ़ान और दूसरे क़बीलों का फ़िर एक दौरा करना शुरू किया और उन्हें मुस्लमानों के तबाह करने के लिए एक बड़े लश्कर की सूरत में जमा करना शुरू कर दिया। जब नौबत यहां तक पहुंच गई और मुस्लमानों की आँखों के सामने फिर वही एहज़ाब वाले मन्ज़र फिरने लगे तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में क़बीला ख़ज़रज के कुछ अन्सारी हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि अब इस फ़ित्ना का ईलाज सिवाए उस

के कुछ नहीं कि किसी तरह इस फ़ित्ना के बानी अबू राफ़े का ख़ातमा कर दिया जाए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस बात को सोचते हुए कि देश में व्यापक ख़ून ख़राबा की बजाय एक मुफ़सिद और फ़ित्ना फैलाने वाले आदमी का मारा जाना बहुत बेहतर है इन सहाबियों को इजाज़त प्रदान फ़रमाई और अब्दुल्लाह बिन अतीक़ अनसारी रज़ि की सरदारी में चार ख़ज़रजी सहाबियों को अबू राफ़े की तरफ़ रवाना फ़रमाया मगर चलते हुए नसीहत फ़रमाई कि देखना किसी औरत या बच्चे को हरगिज़ क़तल ना अत: 6 हिज्री के रमज़ान महीना में यह पार्टी रवाना हुई और निहायत होशयारी के साथ अपना काम करके वापस आ गई और इस तरह इस मुसीबत के बादल मदीना की फ़िज़ा से टल गए। इस घटना का विस्तार बुख़ारी में है जिसकी रिवायत इस मामला में सही तरीन रिवायत है। इस में इस तरह लिखा है कि बरा बिन आज़िब रिवायत करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा की एक पार्टी अबू राफ़े यहूदी की तरफ़ रवाना फ़रमाई और उन पर अबदुल्लाह बिन अतीक़ अनसारी रज़ि को अमीर निर्धारित फ़रमाया। अबू राफ़े की घटना यह थी कि वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सख़्त दुख दिया करता था और आप के ख़िलाफ़ लोगों को उभारता था और उन की मदद किया करता था। जब अब्दुल्लाह बिन अतीक रज़ि और उन के साथी अब्बू राफ़े के क़िला के क़रीब पहुंचे और सूरज डूब गया तो अब्दुल्लाह बिन अतीक रज़ि ने अपने साथियों को पीछे छोड़ा और ख़ुद क़िला के दरवाज़े के पास पहुंचे और इस के क़रीब इस तरह चादर लपेट कर बैठ गए जैसे कोई शख़्स किसी ज़रूरत के लिए बैठा हो। जब क़िला का दरवाज़ा बंद करने वाला शख़्स दरवाज़ा पर आया तो इस ने अब्दुल्लाह रज़ि की तरफ़ देखकर आवाज़ दी कि शख़्स! मैं क़िले का दरवाज़ा बंद करने लगा हूँ। तुमने अंदर आना हो तो जल्द आ जाओ। अब्दुल्लाहल रज़ि चादर में लिपटे लिपटाए जल्दी से दरवाज़ा के अंदर दाख़िल हो कर एक तरफ़ को छुप गए और दरवाज़ा बंद करने वाला शख़्स दरवाज़ा बंद कर के और इस की कुंजी एक क़रीब की खूँटी से लटका कर गया।

इस के बाद अब्दुल्लाह बिन अतीक रज़ि का अपना वर्णन है कि मैं अपनी जगह से निकला और सब से पहले मैंने क़िला के दरवाज़े का ताला खोल दिया ताकि ज़रूरत के वक़्त जल्दी और आसानी के साथ बाहर निकला जा सके। इस वक़्त अबू राफ़े एक चौबारे में था और इस के पास बहुत से लोग मज्लिस जमाए बैठे थे और आपस में बातें कर रहे थे। जब ये लोग उठकर चले गए और ख़ामोशी हो गई तो मैं अबू राफ़े के मकान की सीढ़ीयां चढ़ कर ऊपर चला गया और मैं ने यह सावधानी की कि जो दरवाज़ा मेरे रास्ता में आता था उसे में आगे गुज़र कर अंदर से बंद कर लेता था। जब मैं अब्बू राफ़े के कमरे में पहुंचा तो उस वक़्त वह चिराग़ बुझा कर सोने की तैयारी में था और कमरा बिलकुल अन्देरा था। मैंने आवाज़ देकर अबू राफ़े को पुकारा। जिसके जवाब में उसने कहा। कौन है? बस में इस आवाज़ की सिम्त का अंदाज़ा करके उस की तरफ़ लपका और तलवार का एक ज़ोरदार वार किया मगर अंधेरा बहुत था और मैं इस वक़्त घबराया हुआ था इसलिए तलवार का वार ग़लत पड़ा और अब्बू राफ़े चीख़ मार कर चिल्लाया जिस पर मैं कमरे से बाहर निकल गया। थोड़ी देर बाद मैंने फिर कमरा के अंदर जाकर अपनी आवाज़ को बदलते हुए पूछा। अब्बू राफ़े यह शोर कैसा हुआ था? उसने मेरी बदली हुई आवाज़ को न पहचाना और कहा कि तेरी माँ तुझे खोए मुझ पर अभी अभी किसी शख़्स ने तलवार का वार किया है। मैं यह आवाज़ सुनकर फिर उस की तरफ़ लपका और तलवार का वार किया। इस बार वार कारी पड़ा मगर वह मरा फिर भी नहीं जिस पर मैंने इस पर एक तीसरा वार करके उसे क़तल दिया।

इस के बाद में जल्दी जल्दी दरवाज़े खौलता हुआ मकान से बाहर निकल आया लेकिन जब मैं सीढ़ीयों से नीचे उतर रहा था तो अभी कुछ क़दम ही बाक़ी थे कि मैं समझा कि मैं सब क़दम उतर आया हूँ जिस पर मैं अंधेरे में गिर गया और मेरी पिंडली टूट गई और एक रिवायत में यूं है कि पिंडली का जोड़ उतर गया मगर मैं उसे अपनी पगड़ी से बांध कर घिसटता हुआ बाहर निकल गया लेकिन मैंने अपने जी में कहा कि जब तक अबू राफ़े के मरने का इत्मीनान न हो जाएगा मैं यहां से नहीं जाऊँगा। अत: मैं क़िले के पास ही एक जगह छुप कर बैठ गया। जब सुबह हुई तो क़िला के अंदर से किसी की आवाज़ मेरे कान में आई कि अबू राफ़े व्यापारी हिजाज़ वफ़ात पा गया है।

इस के बाद में उठा और धीरे धीरे अपने साथीयों में आ मिला और फिर हमने मदीना में आकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अबू राफ़े के क़तल की सूचना दी। आप ने सारी घटना सुनकर मुझे इरशाद फ़रमाया कि अपना पांव आगे करो। मैंने अपना पांव आगे किया तो आप ने दुआ मांगते हुए इस पर अपना मुबारक हाथ फेरा जिसके बाद मैंने यूं महसूस किया कि गोया मुझे कोई तकलीफ़ पहुंची नहीं थी ।

एक दूसरी रिवायत में ज़िक्र आता है कि जब अब्दुल्लाह बिन अतीक रज़ि ने अबू राफ़े पर हमला किया तो इस की बीवी ने निहायत ज़ोर से चिल्लाना शुरू किया जिस पर मुझे फ़िक्र हुआ कि इस की चीख़ पुकार सुनकर कहीं दूसरे लोग न होशियार हो जाएं इस पर मैंने उस की बीवी पर तलवार उठाई मगर फिर यह याद कर के कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने औरतों के क़तल करने से मना फ़रमाया है मैं इस इरादे से रुक गया।

फिर सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में लिखा है कि अब्बू राफ़े के क़तल के जवाज़ के बारे में हमें इस जगह किसी बहस में पड़ने की ज़रूरत नहीं। अबू राफ़े की ख़ून करने वाली कार्यवाहीयां तारीख़ का एक खुला हुआ पृष्ठ हैं और इस से एक मिलती-जुलती घटना में एक तफ़सीली बेहस कअब बिन अशर्फ़ के क़तल के ज़िमन में वर्णन हो चुकी है

इस वक़्त मुस्लमान निहायत कमज़ोरी की हालत में चारों तरफ़ से मुसीबत में घिरे थे सारा देश मुस्लमानों को मिटाने के लिए मुत्तहिद हो रहा था। ऐसे नाज़ुक वक़्त में अबू राफ़े अरब के विभिन्न क़बीलों को इस्लाम के ख़िलाफ़ उभार रहा था। (यह मैं ख़ुलासा वर्णन कर रहा हूँ पूरी तारीख़ नहीं वर्णन कर रहा कि क्यों उस का क़तल जायज़ था? इस का और इस बात की तैयारी कर रहा थाकि जंग एहज़ाब की तरफ़ अरब के जंगली क़बीले फिर मुत्तहिद हो कर मदीने पर धावा बोल दें। अरब में इस वक़्त कोई हुकूमत नहीं थी कि जिसके ज़रीया मदद चाही जाती बल्कि हर क़बीला अपनी जगह आज़ाद और ख़ुद-मुख़्तार था। अत: सिवाए उस के कि अपनी हिफ़ाज़त के लिए ख़ुद कोई तदबीर की जाती और कोई अवस्था नहीं थी।

(उद्धिरत सीरत ख़ातमन्बिय्यीन पृष्ठ 721 से 724)

पिछले ख़ुत्बे में इस की यह विस्तार भी वर्णन हो चुका है कि क्यों किया कारण थे? हुकूमत के अन्तर्गत में , कोई हुकूमत नहीं थी और जो हुकूमत थी वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अपनी थी। बहरहाल इन हालात में सहाबा ने जो कुछ किया वह बिलकुल दरुस्त और उचित था और जंग की हालत में जब कि एक क़ौम मौत तथा जीवन के माहौल में से गुज़र रही हो इस किस्म की तदाबीर बिलकुल जायज़ समझी जाती हैं।

हज़रत उमर रज़ि ने हज़रत मुहम्मद बिन मसलेमह रज़ि को अपने दौर ख़िलाफ़त में जुहीना क़बीला से वसूली ज़कात के लिए निर्धारित किया था। जब कभी किसी आमिल के ख़िलाफ़ दरबार ख़िलाफ़त में शिकायात प्राप्त होतीं तो हज़रत उमर रज़ि तहक़ीक़ के लिए उन्हें रवाना किया करते थे। इसी तरह हज़रत उमर रज़ि को उन पर भरोसा था इसलिए सरकारी मुहासिल की वसूली

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

के लिए भी इन्ही को, हज़रत मुहम्मद बिन मसलेमह रज़ि को, भेजा जाता था। वह हज़रत उमर रज़ि के हाँ विभिन्न इलाक़ों के मुश्किल मामलों को सुलझाने के लिए निर्धारित थे। कूफ़ा में हज़रत सअद बिन अबी वकास रज़ि ने महल तामीर किया तो इस की छानबीन के लिए हज़रत उमर रज़ि के नुमाइंदे थे। इस के बारे में रिवायत कुछ यूं मिलती है कि हज़रत उमर रज़ि को मालूम हुआ कि हज़रत सअद बिन अबी वकास रज़ि ने एक महल बनाया है और इस का दरवाज़ा रखा है जिसकी वजह से आवाज़ सुनाई नहीं देती। अतः आप ने हज़रत मुहम्मद बिन मसलेमह रज़ि को रवाना किया और हज़रत उमर रज़ि की यह आदत थी कि जब वह इच्छा के अनुसार कोई काम करना चाहते तो उन ही को अर्थात मुहम्मद बिन मसलेमह रज़ि को रवाना किया करते थे। हज़रत उमर रज़ि ने उनसे फ़रमाया सअद के पास पहुंच कर उस का दरवाज़ा जला देना। अत: वह कूफ़ा पहुंचे, दरवाज़े पर पहुंचे तो चक़माक़ निकाली, आग सुलगाई फिर दरवाज़े को जला दिया। हज़रत सअद को मालूम हुआ तो वह बाहर तशरीफ़ लाए और हज़रत मुहम्मद बिन मसलेमह रज़ि ने उन्हें सारी बात बताई कि मैंने क्यों है।

(अल-असाबा फ़ी तमीईज़िस्सहाब भाग 6 पृष्ठ 28 मुहम्मद बिन मसलेमह रज़ि)

हज़रत उसमान रज़ि की शहादत के बाद हज़रत मुहम्मद बिन मसलेमह रज़ि के बारे में ज़िक्र आता है कि हज़रत उसमान रज़ि की शहादत के बाद उन्होंने गोशा-नशीनी धारण कर लिया और लक्कड़ी की तलवार बनवा ली। कहते थे कि मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यही हुक्म दिया था। हज़रत मुहम्मद बिन मसलेमह रज़ि वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे एक तलवार तोहफ़ा में दी और फ़रमाया कि इस से मुशरिकीन से जिहाद करना जब तक वह तुम से क़िताल करते रहें और जब तू मुस्लमानों को देखे कि वह एक दूसरे को क़त्ल करना शुरू कर दें तो उसे अर्थात तलवार को किसी चट्टान के पास लाकर मारना यहां तक कि वह टूट जाए। फिर अपने घर में बैठ जाना यहां तक कि तुम्हारे पास किसी गलती करने वाले का हाथ पहुंचे या तुम्हें मौत आ ले। अत: आप ने ऐसा ही किया। आप फ़ित्नों से अलग रहे और जंग जमल और सफ्फ़ैन में शामिल नहीं हुए।

(उसदुल ग़ाबह बाग 4 पृष्ठ 319 और अलअसाबह भाग 6 पृष्ठ 29 मुहम्मद बिन मुस्लिमा)

ज़ुबैअ बिन हुसैन सअलबी वर्णन करते हैं कि हम हज़रत हुज़ैफ़ह रज़ि के पास बैठे हुए थे उन्होंने बताया कि मैं एक ऐसे आदमी को जानता हूँ जिसे फ़ित्ना कुछ भी नुक़्सान नहीं पहुंचा सकता। हमने कहा वह कौन है। हज़रत हुज़ीफ़ रज़ि ने कहा कि वह हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा अनसारी रज़ि हैं। फिर जब हज़रत हुज़ैफ़ह रज़ि फ़ौत हो गए और फ़ित्ना ज़ाहिर हो गया तो मैं इन लोगों के साथ निकला जो मदीना से निकल रहे थे। फिर में पानी के एक स्थान पर पहुंचा। वहां पानी available था। मैंने वहां एक टूटा हुआ ख़ेमा देखा जो एक तरफ़ को झुका हुआ था और हुवा के थपेड़े उसे लग रहे थे। मैंने पूछा कि यह ख़ेमा किस का है। लोगों ने बताया कि यह मुहम्मद बिन मसलेमह रज़ि का ख़ेमा है। मैं उनके पास आया तो देखा कि वो एक उम्र रसीदा इन्सान हैं। मैंने उनसे कहा अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए। मैं देखता हूँ कि आप मुस्लमानों के बेहतरीन लोगों में से हैं। आप ने अपना शहर और अपना घर और अपने अहल-ओ-अयाल और अपने पड़ोसी छोड़ दिए हैं। उन्होंने कहा कि मैंने ये सब कुछ शरारत से घृणा की वजह से छोड़ा है।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 339 दारुल कुतुब अल्इ-लिमिया बेरूत 1990 ई)

उनकी वफ़ात के बारे में मतभेद है कि कब हुई? विभिन्न रवायतों के अनुसार तैंतालीस, छयालीस या सैंतालीस हिज्री में मदीना में आप की वफ़ात हुई और इस वक़्त आप की उम्र 77 साल थी। आप की नमाज़ जनाज़ा मरवान बिन हकम ने पढ़ाई जो उस वक़्त मदीने के अमीर थे। कुछ रवायतों में यह भी ज़िक्र मिलता है कि किसी ने उन्हें शहीद कर दिया था।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मारफ़ितस्सहाब भाग 5 पृष्ठ 107 मुहम्मद बिन मुस्लिमा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 2003 ई)

(अलइस्तीयाब फ़ी माअरफ़तिस्सहाब भाग 3 पृष्ठ 433 मुहम्मद बिन मुस्लिमा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमिया बेरूत 2010 ई)

उनका यह ज़िक्र अब ख़त्म हुआ। नमाज़ों के बाद में एक जनाज़ा हाज़िर भी पढ़ाऊंगा जो आदरणीय ताज दीन साहिब पुत्र सदर दीन साहिब का है।10 फरवरी को 84साल की उम्र में उनकी वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेअऊन। मरहूम अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मूसी थे। यह यूगेन्डा में पैदा हुए।1967 ई में यूके शिफ़्ट हो गए। 1984 ई में जब इस्लामाबाद की ज़मीन ख़रीदी गई तो मरहूम ने इस्लामाबाद के लिए अपनी ख़िदमात हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे की ख़िदमत में पेश कर दें। फिर बाईस साल तक इस्लामाबाद में बड़े इख़लास के साथ बड़ी बेलौस ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। इस्लामाबाद में पहले जलसे के आयोजन से लेकर आख़री जलसे तक अनथक मेहनत की और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों को हर सहूलत पहुंचने की मुम्किन कोशिश करते रहे। हर किस्म का टेक्नीकल काम कर सकते थे इसलिए उनको इस्लामाबाद में दिन रात हर किस्म के काम करने की तौफ़ीक़ मिली जिसमें इलैक्ट्रिक, प्लंबिंग, सैनिटरी, लक्कड़ी इत्यादि का काम शामिल है। मरहूम नमाज़ रोज़े के पाबंद थे। दीनदार थे। इंतिहाई ख़ुश-मिज़ाज थे। इताअत करने वाले थे। बड़े धीमे मिज़ाज के इन्सान थे। ख़िलाफ़त के साथ बड़ा गहरा इख़लास तथा वफ़ा का सम्बन्ध था। उनके पोते मुदब्बिर दीन साहिब मुरब्बी सिलसिला हैं। उन्होंने यू के से जामिया पास किया था और ऐम टी ए में आजकल काम कर रहे हैं। यह लिखते हैं कि अक्सर लोग जो इस्लामाबाद में रहा करते थे बताते हैं कि इंतिहाई मेहनती थे। मेरे दादा जान बताते थे कि जब वो इस्लामाबाद आए तो शुरू में बिलकुल अकेले रहते थे। न तो कोई बिजली और न ही हीटिंग थी। बहुत मुश्किल वक़्त था। मगर वह इस बात पर ख़ुश होते थे कि उनको जमाअत और ख़लीफ़ा वक़्त के लिए क़ुर्बानी देने की तौफ़ीक़ मिल रही है। वक़्त पर नमाज़ पढ़ना, ख़ुद हाथ से काम करना, मेहमान-नवाज़ी और सब्र उनके कुछ नुमायां गुण थे। और लिखने वालों ने भी उनकी यही खूबियां लिखी हैं और मजीद सयालकोटी साहिब ने भी यही बताया है कि यहां इस्लामाबाद में उन्होंने वर्कशॉप बनाई। मशीनों के काम के माहिर थे। लंदन की मुख़्तलिफ़ कंपनीयों से सम्पर्क किए। इस्लामाबाद की हर बैरक को बारी बारी आबाद किया। फिर रिहायश के काबिल बनाया। अपनी टीम बनाने के गुरु भी जानते थे। हर सर्दियां गर्मियां मसरूफ़ रहते थे क्योंकि पुरानी चीज़ें थीं सबको ठीक करना। दुबारा नए सिरे से बहाल करना बड़ा काम था जो बड़ी मेहनत से उन्होंने किया और फिर हमेशा ख़ुश-मिज़ाज रहते थे। यही कहा करते थे कि बस मेरे लिए दुआ करो। काम के दौरान दिन रात एक छोटे से कमरे में वहां इस्लामाबाद में रहते थे, कभी उन्होंने वहां बीवी बच्चों की पर्वा नहीं की जो लंदन में रहते थे और कभी कभी उनके पास आ जाते थे।

अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनकी औलाद को और नस्लों को भी उनकी तरह इख़लास तथा वफ़ा में बढ़ाए और सब्र और हौसला प्रदान फ़रमाए।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 06 मार्च 2020 ई पृष्ठ 5 से9)

☆ ☆ ☆ ☆

अल्लाह तआला का उपदेश

(आले इम्रान 17) رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

ख़ुत्ब: जुमअ:

''अल्लाह तआला के फ़ज़्ल और इस के रहम से वह पेशगोई जिसके पूरा होने का एक लंबे समय से इंतिज़ार किया जा रहा था अल्लाह तआला ने इस के बारे में अपने इलहाम और खबरों के माध्यम से मुझे बता दिया है कि पेशगोई मेरे वजूद में पूरी हो चुकी है। और अब इस्लाम के दुश्मनों पर ख़ुदा तआला ने सम्पूर्ण हुज्जत कर दी है और उन पर यह बात स्पष्ट कर दी है कि इस्लाम ख़ुदा तआला का सच्चा मज़हब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा तआला के सच्चे रसूल और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ख़ुदा तआला के सच्चे भेजे हुए हैं'

(अल-मुस्लेह अल-मौऊद रज़ि)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहि वसल्लम के सुपुत्र हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अस्सानी रज़ी अल्लाह अन्हो के वजूद में पेशगोई मुस्लेह मौऊद के पूरा होने, इस पेशगोई के उद्देश्यों और इस अन्तर्गत में जमाअत अहमदिया के लोगों की ज़िम्मेदारियों का वर्णन।

पेशगोई मुस्लेह मौऊद के बारे में किए जाने वाले कुछ आरोपों के ईमान वर्धक उत्तर

'उलूमे ज़ाहरी तथा बातिनी से पुर किए जाने की तुलना से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो के इलमी कारनामों का संक्षिप्त वर्णन।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि की किताबों, लैक्चरों और तक़रीरों के संग्रह 'अनवारुल उलूम को पढ़ने की तहरीक।

आदरणीया मर्यम एलीज़ाबेथ साहिबा पत्नी आदरणीय मलिक उम्र अली खोखर साहिब रईस मुल्तान भूतपूर्व अमीर जमाअत मुल्तान और अज़ीज़ जाहिद फ़ारस अहमद (वाकिफ नौ की वफ़ात। मरहूमीन का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 21 फरवरी 2020 ई. स्थान - मस्जिद 'बैयतुल फ़ुतूह मोर्डन सिर्रे (यू. के)

जमाअत अहमदिया में 20 फरवरी का दिन पेशगोई मुस्लेह मौऊद के बारे में खासतौर पर याद रखा जाता है और जमाअतों में मुस्लेह मौऊद दिवस के हवाले से जलसे भी होते हैं। यद्यपि मैं इस बात की पहले भी कई जगह वज़ाहत कर चुका हूँ लेकिन नए आने वालों और बच्चों के लिए भी दुबारा वज़ाहत कर दूं कि मुस्लेह मौऊद दिवस हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अस्सानी, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के जन्म की याद में नहीं मनाया जाता बल्कि एक पेशगोई के पूरा होने की याद में मनाया जाता है। ऐसी पेशगोई जो इस्लाम की बरतरी और सच्चाई साबित करने के लिए अल्लाह तआला के इलहाम के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहि वसल्लम ने की थी जो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के जन्म से तीन साल पहले की गई थी । जिसमें एक इस्लाम के ख़ादिम मौऊद बेटे के जन्म की ख़बर थी जो दुश्मनों के लिए निशान के तौर पर पेश की गई थी। अत: कल 20 फरवरी थी और इस पेशगोई को 134 साल हो गए और सौ साल से अधिक समय से यह चमकता हुआ निशान है। बहरहाल जैसा कि मैंने कहा इस हवाले से जमाअतों में जलसे भी होते हैं और मौऊद बेटे के बारे में पेशगोई जो विभिन्न पहलू और विभिन्न गुण अपने अंदर लिए हुए है उनके बारे में कुछ सीमा तक वर्णन जलसों में भी होता है। लेकिन एक दो घंटे के जलसे में समस्त बातें और उनका महत्व और उनके पूरा होने की शान वर्णन नहीं हो सकती। अत: जब जलसा में इस का पूरा अहाता नहीं हो सकता तो एक ख़ुत्बे में इस के विभिन्न पहलू वर्णन करना तो बिलकुल असम्भव है। इसलिए मैं ने सोचा कि वे नकात जिनका विस्तार हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने ख़ुद वर्णन की हैं उनमें से कुछ हवाले वर्णन कर दूं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने जो वर्णन किया है उसे पढ़ने और सुनने का एक अपना ही लुतफ़ और एहसास होता है। बहरहाल इन संक्षिप्त हवालों से भी अंदाज़ा हो जाता है कि इस पेशगोई की वुसअत कितनी है और किस शान से यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहि वसल्लम के मौऊद बेटे की ज़ात में पूरी हुई।

बहरहाल इस से पहले मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्दों में पेशगोई के शब्द और विस्तार वर्णन करता हूँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी पेशगोइयों का ज़िक्र फ़रमाते हुए और विरोधियों को यह बताते हुए कि पेशगोई मुस्लेह मौऊद के अन्तर्गत में क्या पेशगोईयां हैं फ़रमाते हैं कि

"पहली पेशगोई इलहाम के द्वारा सम्मान्नीय ख़ुदाए रहीम करीम तथा बुज़ुर्गने जो हर-यक चीज़ पर क़ादिर है (उस के नाम का प्रताप है)मुझ को अपने इलहाम से सम्बोधित कर के फ़रमाया। मैं तुझे एक रहमत (कृपा) का निशान देता हूँ उसी के अनुसार जो तूने मुझसे मांगा। अत: मैंने तेरी वेदनाओं को सुना और तेरी दुआओं को अपनी रहमत से क़बूलियत (मंज़ूरी) की जगह दी और तेरे सफ़र को (जो होशियारपुर और लुधियाना का सफ़र है) तेरे लिये मुबारक कर दिया। अत: क़ुदरत (शक्ति) और रहमत (कृपा) और क़ुर्बत (निकटता) का निशान तुझे दिया जाता है। फ़ज़्ल और एहसान (कृपा व उपकार) का निशान तुझे प्रदान किया जाता है और फ़तह और ज़फ़र (सफलता और विजय) की कुंजी तुझे मिलती है। हे मुज़फ़्फ़र (विजेता) ! तुझ पर सलाम। ख़ुदा ने यह कहा ताकि वे जो क़बरों में दबे पड़े हैं, बाहर आयें और इस्लाम धर्म की प्रतिष्ठा और कलामुल्लाह (क़ुर्आन) की श्रेष्ठता लोगों पर प्रकट हो और ताकि सत्य अपनी पूरी बर्कतों के साथ आ जाए और बातिल (झूठ) अपनी पूरी बुराईयों के साथ भाग जाये और लोग समझें कि मैं क़ादिर (सामर्थ्यवान) हूँ, जो चाहता हूँ करता हूँ।"(अर्थात ख़ुदा तआला कादिर है जो चाहता है करता है) "अत: वे विश्वास कर लें कि मैं तेरे साथ हूँ।"(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को अल्लाह तआला फरमाता है कि ताकि वे विश्वास करें कि मैं तेरे साथ हूं।) "और उन्हें जो ख़ुदा के वजूद पर ईमान नहीं लाते और ख़ुदा और ख़ुदा के धर्म और उसकी किताब और उसके पवित्र रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इन्कार और तकज़ीब (विरोध और झूठ) की दृष्टि से देखते हैं, एक खुली निशानी मिले और मुजरिमों की राह प्रकट हो जाये। अत: तुझे खुश्ख़बरी हो कि एक वजीह (प्रतापी) और पवित्र लड़का तुझे दिया जाएगा। एक ज़की ग़ुलाम (पवित्र लड़का) तुझे मिलेगा। वह लड़का तेरे ही बीज से तेरी ही सन्तान व कुल का होगा। सुन्दर, पवित्र लड़का, तुम्हारा मेहमान आता है उसका नाम अन्मवाईल और बशीर भी है। उसको मुक़द्दस रूह (पवित्र आत्मा) दी गई है और वह अशुद्धता से पवित्र है। वह अल्लाह का नूर (प्रकाश) है। मुबारक वह जो आसमान से आता है। उसके साथ फ़ज़्ल है, जो उसके आने के साथ आयेगा। वह साहिबे शिकोह (प्रतापी) और अज़मत (महान) और दौलत (धनी) होगा। वह दुनिया में आयेगा और अपने मसीही नफ़्स अर्थात् (मसीही शक्ति) और रूहुल हक़ की बर्कत से बहुतों को बीमारियों से साफ़ करेगा। वह कलिमतुल्लाह (अर्थात एकेश्वरवाद का प्रतीक) है। क्योंकि ख़ुदा की रहमत (कृपा) व ग़य्यूरी (स्वाभिमान) ने उसे अपने कलिमा तम्जीद (बुज़ुर्गी व शान) से भेजा है। वह सख़्त ज़हीन व फ़हीम (बुद्धिमान एवं सूझवान) होगा और दिल का हलीम (शांत स्वभाव) और उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी (अर्थात् सांसारिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान) से पुर किया जायेगा। वह तीन को चार करने वाला होगा।" (आगे आप ने फरमाया कि)(इस के अर्थ समझ नहीं आए)दुशंब: (सोमवार) है मुबारक दुशन्ब: (अर्थात् सोमवार) फ़र्ज़न्द दिल बंद गिरामी अर्जुमन्द (सम्मान जनक, मनमोहक, श्रेष्ठ सुपुत्र)। مَظۡهَرُ الۡاَوَّلِ وَالۡاٰخِرِ مَظۡهَرُ الۡحَقِّ وَالۡعُلَاءِ كَاَنَّ اللّٰهَ نَزَلَ مِنَ السَّمَاءِ मज़्हरूल् अव्वले वल् आख़िरि, मज़्हरूल् हक्क़े वल् अलाए कअन्नल्लाह नज़ल मिनस्समाअ। अर्थात वह उस ख़ुदा का प्रकाश है जो हमेशा से है और सदैव रहने वाला है वह उस ख़ुदा का प्रकाश है जो सच है और महान है (उसका आना ऐसा ही है) जैसा कि अल्लाह स्वंय आकाश से उतर आया हो। जिसका आना बहुत मुबारक और ख़ुदा के प्रताप के प्रकट होने का कारण होगा। नूर आता है नूर, जिसको ख़ुदा ने अपनी इच्छा के इत्र से सुगंधित किया है।

हम उसमें अपनी रूह डालेंगे। ख़ुदा का साया उसके सिर पर होगा। वह अतिशीघ्र बढ़ेगा और असीरों (गुलामों) की रुस्तगारी (मुक्ति) का कारण होगा और ज़मीन के किनारों तक शोहरत (प्रसिद्धि) पाएगा और क़ौमें (जातियां) उससे बरकत पाऐंगी। तब अपने नफ़सी नुक़ता आसमान अर्थात् ख़ुदा की तरफ उठाया जायेगा। व काना अमरन मक़्ज़िय्या (और यह काम पूरा होकर रहने वाला है)।"

(आइना कमालाते इस्लाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 5 पृष्ठ 647)

यह हैं पेशगोई के शब्द जो मौऊद बेटे की विशेषताओं और विभिन्न पहलू वर्णन कर रहे हैं। अल्लाह तआला से निशान मांगने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहि वसल्लम ने जो चिल्ला काटा था और इस के नतीजे में अल्लाह तआला ने आपको जो इलहाम किया जिसका विस्तार अभी मैं ने वर्णन किया है इस चिल्ला की जगह का नक़्शा खींचते हुए और इस में जो दुआएं आपने कीं उनकी क़बूलीयत के नतीजे में इलहाम का वर्णन करते हुए जिसके नतीजा में आप ने मुस्लेह मौऊद रज़ि की पेशगोई फ़रमाई थी। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि

''आज से पूरे अट्ठावन साल पहले, (जब यह वर्णन कर रहे हैं उस वक़्त इस पेशगोई को अट्ठावन साल हुए थे जिसको आज उनसठवां साल शुरू हो रहा है,20 फरवरी के दिन1886 ई में इस शहर होशियारपुर में", (आप यह ख़ुत्बा होशियारपुर में दे रहे थे। आप ने फ़रमाया कि इस शहर होशियारपुर में इस मकान में जहां आप खड़े थे आप ने इशारा किया)जो कि मेरी उंगली के सामने है एक ऐसे मकान में जो उस वक़्त 'तवीला कहलाता था जिसके अर्थ यह हैं कि वह रिहायश का असली स्थान नहीं था, (वह बाक़ायदा घर नहीं था बल्कि एक रईस के ज़ाइद मकानों में से वह एक मकान था (जैसे कई बार अनेक्सियां बना दी जाती हैं) जिसमें शायद संयोग से कोई मेहमान ठहर जाता हो या वहां उन्होंने स्टोर बना रखा हो या ज़रूरत के अनुसार जानवर बाँधे जाते हूँ,' (एक ज़ाइद जगह थी, ज़ाइद कमरा बाहर था। आप फ़रमाते हैं "कादियान का एक गुमनाम व्यक्ति जिसको ख़ुद कादियान के लोग भी पूरी तरह नहीं जानते थे लोगों की इस विरोधता को देखकर जो इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक से वे रखते थे अपने ख़ुदा के हुज़ूर एकान्त में इबादत करने और उस की सहायता और समर्थन का निशान मांगने के लिए आया और चालीस दिन लोगों से अलग रह कर उसने अपने ख़ुदा से दुआएं मांगें। चालीस दिन की दुआओं के बाद ख़ुदा ने इस को एक निशान दिया। वह निशान यह था कि मैं न सिर्फ उन वादों को जो मैं ने तुम्हारे साथ किए हैं पूरा करूँगा और तुम्हारे नाम को दुनिया के किनारों तक पहुंचाऊंगा बल्कि इस वादा को ज़्यादा शान के साथ पूरा करने के लिए मैं तुम्हें एक बेटा दूँगा जो कुछ विशेष गुणों से समंवित होगा वह इस्लाम को दुनिया के किनारों तक फैलाएगा। कलाम इलाही के मआरिफ़ लोगों को समझाएगा। रहमत और फ़ज़ल का निशान होगा और वह धार्मिक और सांसारिक उलूम जो इस्लाम के प्रकाशन के लिए ज़रूरी हैं उसे प्रदान किए जाएेंगे। इसी तरह अल्लाह तआला उस को लंबी उम्र प्रदान फ़रमाएगा यहां तक कि वह दुनिया के किनारों तक शौहरत पाएगा"। (और आज दुनिया के जिस देश में भी जमाअत अहमदिया स्थापित है इस पेशगोई की शौहरत और इस महान बेटे की शौहरत है।)

(उद्धरित दावा मुस्लेह मौऊद के मुताल्लिक़ पुरशोकत ऐलान। अनवारुल उलूम भाग17 पृष्ठ146-147)

जब यह इश्तिहार प्रकाशित हुआ तो उस वक़्त मुख़ालिफ़ीन ने आरोप लगाने शुरू कर दिए कि यह कौन सी पेशगोई है। कोई भी ऐलान कर सकता है कि मेरे हाँ बेटा पैदा होगा। इस का जवाब भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहि वसल्लम ने दिया और इस का ज़िक्र करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फ़रमाते हैं कि "जब यह इश्तिहार प्रकाशित हुआ तो दुश्मनों ने इस पर फिर आरोपों का एक सिलसिला शुरू कर दिया। तब 22 मार्च1886 ई को आप ने एक और इश्तिहार प्रकाशित फ़रमाया। दुश्मनों ने एतराज़ यह किया था कि ऐसी पेशगोई का क्या भरोसा किया जा सकता है कि मेरे हाँ एक लड़का पैदा होगा। क्या हमेशा लोगों के यहाँ लड़के पैदा नहीं हुआ करते? बहुत कम ऐसे लोग होते हैं जिसका कोई लड़का न हो या जिसके यहाँ लड़कियां ही लड़कियां हूँ। वर्ना आम तौर पर लोगों के यहाँ लड़के पैदा होते रहते हैं और कभी उनका जन्म कोई कोई ख़ास निशान क़रार नहीं दिया जाता। अत: अगर आपके यहाँ भी कोई लड़का पैदा हो जाए तो इस से यह क्योंकर साबित होगा कि दुनिया में इस के द्वारा ख़ुदा तआला का कोई ख़ास निशान ज़ाहिर हुआ है। आप ने, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लोगों के इस आरोप का जवाब देते हुए 22 मार्च के इश्तिहार में तहरीर फ़रमाया कि "यह सिर्फ़ पेशगोई ही नहीं बल्कि एक महान आसमानी निशान है जिसको प्रताप वाले ख़ुदा ने हमारे नबी करीम रऊफ़ तथा रहीम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सदाक़त तथा महानता प्रकट करने के लिए ज़ाहिर फ़रमाया"।

फिर उसी इश्तिहार में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह लिखा है कि '' अल्लाह तआला के फज़ल तथा उपकार एवं हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर बरकत के साथ ख़ुदा तआला ने इस विनीत की दुआ को क़बूल कर के ऐसी बरकत वाली रूह भेजने का वादा फ़रमाया है जिसकी ज़ाहिरी तथा बातिनी बरकतें सारी ज़मीन पर फैलेंगी हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फ़रमाते हैं कि बात यह है कि अगर आप अपने यहाँ केवल एक बेटा पैदा होने की ख़बर देते तब भी यह ख़बर अपनी ज़ात में एक पेशगोई होती क्योंकि दुनिया में एक हिस्सा चाहे वह कितना ही थोड़ा क्यों ना हो बहरहाल ऐसे लोगों का होता है जिनके यहाँ कोई औलाद नहीं होती। दूसरे आप ने जब यह ऐलान किया उस वक़्त आप की उम्र 50 साल से ऊपर थी और हज़ारों हज़ारों लोग दुनिया में ऐसे पाए जाते हैं जिनके हाँ पच्चास साल के बाद औलाद की पैदाइश का सिलसिला बंद हो जाता है और फिर ऐसे भी होते हैं जिनके हाँ सिर्फ़ लड़कियां ही लड़कियां पैदा होती हैं और फिर ऐसे भी होते हैं जिनके यहाँ लड़के तो पैदा होते हैं मगर पैदा होने के थोड़े अर्से ही बाद मर जाते हैं और ये सारी शंकाएं इस जगह मौजूद थे। अत: पहले तो किसी लड़के की पैदाइश की ख़बर देना किसी इन्सान की ताक़त में नहीं हो सकता। लेकिन आप बतौर तनज़्ज़ुल इस आरोप को स्वाकीर कर के फ़रमाते हैं कि अगर मान भी लिया जाए कि केवल किसी लड़के की पैदाइश की ख़बर देना पेशगोई नहीं कहला सकता तो सवाल यह है कि मैंने केवल एक लड़के के जन्म की कब ख़बर दी है। मैंने यह तो नहीं कहा कि मेरे यहाँ एक लड़का पैदा होगा बल्कि मैंने यह कहा है कि ख़ुदा तआला ने मेरी दुआओं को क़बूल फ़र्मा कर एक ऐसी बरकत वाली रूह भेजने का वादा फ़रमाया जिसकी ज़ाहिरी तथा बातिनी बरकतें सारी ज़मीन पर फैलेंगी।

(उद्धरित अलमौऊद अनवारुल उलूम भाग17 पृष्ठ 529-530)

जैसा कि मैं ने कहा कि आज दुनिया गवाह है कि इस मौऊद बेटे ने दुनिया के किनारों तक शौहरत पाई है और हिन्दुस्तान के बाहर या कादियान के बाहर दुनिया का हर मिशन आप की सच्चाई का सबूत है। बहुत सारे मिशन दुनिया में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के ज़माना में स्थापित हुए थे और वही सिलसिला, इसी निज़ाम का सिलसिला आज तक चल रहा है।

कुछ लोगों का यह भी आरोप था कि मुस्लेह मौऊद रज़ि बाद के किसी अर्से में पैदा होंगे सौ साल बाद दो सौ साल बाद या तीन सौ साल बाद। इस की स्पष्टता करते हुए कि किस कारण से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने निशान मांगा था और क्यों आप के ज़माना में यह पैदा होना और निशान पूरा होना चाहिए था ,हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फ़रमाते हैं कि

''कुछ लोग कहते हैं कि मुस्लेह मौऊद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किसी अगली नस्ल से तीन चार सौ साल के बाद आएगा यहां भी नस्ल का ज़िक्र है कि अगली नस्ल से कोई तीन चार-सौ साल के बाद आएगा। "वर्तमान ज़माना में नहीं आ सकता मगर उनमें से कोई व्यक्ति ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं करता कि वह पेशगोई के शब्दों को देखे और उन पर ध्यान करे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तो लिखते हैं इस वक़्त इस्लाम पर आरोप किया जाता है कि इस्लाम अपने अंदर निशान दिखाने की कोई ताक़त नहीं रखता। अत: पण्डित लेखराम आरोप कर रहा था कि अगर इस्लाम सच्चा है तो निशान दिखाया जाए। इंद्र मन आरोप कर रहा था कि अगर इस्लाम सच्चा है तो निशान दिखाया जाये। आप अल्लाह तआला के हुज़ूर झुकते हैं और कहते हैं कि हे ख़ुदा तू ऐसा निशान दिखा जो इन निशान मांगने वालों को इस्लाम का मानने वाला कर दे। तो ऐसा निशान दिखा जो इन्द्रमन मुरादाबादी इत्यादि को इस्लाम का मानने वाला कर दे और ये आलोचक हमें बताते हैं।' आप

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

फ़रमाते हैं कि ये एतराज़ करने वाले कहते हैं "ये आलोचक हमें बताते हैं कि जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला के हुज़ूर यह दुआ की तो ख़ुदा ने आप को यह ख़बर दी कि आज से तीन सौ साल के बाद हम तुम्हें एक बेटा प्रदान फ़रमाएँगे जो इस्लाम की सच्चाई का निशान होगा। क्या दुनिया में कोई भी शख़्स है जो इस बात को अक्ल वाली क़रार दे सके?' बहुत अधिक नामाक़ूल बात है। "यह तो ऐसी ही बात है जैसे कोई शख़्स सख़्त प्यासा हो और किसी शख़्स के दरवाज़ा पर जाए और कहे भाई मुझे सख़्त प्यास लगी हुई है ख़ुदा के लिए मुझे पानी पिलाओ और वह घरवाला आगे से यह जवाब दे कि साहिब आप घबराएँ नहीं। मैंने अमरीका ख़त लिखा हुआ है वहां से इसी साल के आख़िर तक एक उच्च स्तर का एसिनस आ जाएगा शर्बत आ जाएगा "और अगले साल आपको शर्बत बना कर पिला दिया जाएगा। कोई पागल से पागल भी ऐसी बात नहीं कर सकता। कोई पागल से पागल भी ऐसी बात ख़ुदा और इस के रसूल की तरफ़ मंसूब नहीं कर सकता।पण्डित लेखराम, मुंशी इन्द्रमन मुरादाबादी और कादियान के हिंदू तो यह कह रहे हैं कि इस्लाम के बारे में यह दावा कि इस का ख़ुदा दुनिया को निशान दिखाने की ताक़त रखता है एक झूठा और बे-बुनियाद दावा है। अगर इस दावा में कोई हक़ीक़त है तो हमें निशान दिखाया जाए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के हुज़ूर झुकते हैं और कहते हैं कि हे ख़ुदा मैं तुझ से दुआ करता हूँ कि तू मुझे रहमत का निशान दिखा। तू मुझे क़ुदरत और क़ुरबत का निशान प्रदान फ़र्मा। अत: यह निशान तो ऐसे क़रीब के समय में ज़ाहिर होना चाहिए था जबकि वे लोग ज़िन्दा मौजूद होते जिन्हों ने ये निशान मागं था। अत: ऐसा ही हुआ।1889 ई में' eighteen eighty nine मैं "जब मेरा जन्म अल्लाह तआला की पेशगोइयों के अनुसार हुआ तो वे लोग ज़िन्दा मौजूद थे जिन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से यह निशान मांगा था। फिर जैसे-जैसे मैं बढ़ा अल्लाह तआला के निशान ज़्यादा से ज़्यादा ज़ाहिर होते चले गए।'

(मैं ही मुस्लेह मौऊद की पेशगोई का मिस्दाक़ हूँ,अनवारुल उलूम भाग 17 पृष्ठ 222,223)

अत: यह निशान हज़रत मसीह मौऊद अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में और उन लोगों की ज़िन्दगी में जो इस्लाम पर आरोप लगाते थे ज़ाहिर होना ज़रूरी था जिन्होंने यह निशान मांगा था और यह ज़ाहिर हुआ। यह भी बड़ी अहम बात है कि हमें यह मालूम हो कि इस पेशगोई की उद्देश्य क्या थे और क्यों हज़रत मसीह मौऊद के ज़माने में इन उद्देश्यों को प्राप्त करना ज़रूरी था। कुछ तो अभी मैंने संक्षिप्त वर्णन किया और क्यों आप के यह बेटा जो आप की शारीरिक और ख़ूनी औलाद और आप का वह बेटा है जिस के जिस्मानी बाप आप थे उस के हक़ में यह निशान पूरा होना ज़रूरी था। बहरहाल इन उद्देश्यों का ज़िक्र करते हुए एक स्थान पर आप फ़रमाते हैं कि

''हज़रत मसीह मौऊद अलैहि वसल्लम अपने 20 फरवरी 1886 ई के इश्तिहार में ज़िक्र फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने मुझ पर यह प्रकट फ़रमाया है कि यह पेशगोई जो दुनिया के सामने की गई उस के कई उद्देश्य हैं। अव्वल यह पेशगोई इसलिए की गई है कि जो ज़िन्दगी के इच्छुक हैं मौत से नजात पाइं और जो क़ब्रों में दबे पड़े हैं बाहर आएं' अर्थात रुहानी तौर पर मुर्दा हो चुके हैं ज़िन्दा हूँ। "अगर यह समझा जाए कि इस पेशगोई ने चार-सौ साल के बाद पूरा होना है।' आप और अधिक वज़ाहत फ़र्मा रहे हैं। "तो उस के अर्थ यह बनेंगे कि मैंने यह पेशगोई इसलिए की है कि जो आज ज़िन्दगी के इछुक हैं वे बेशक मरे रहें चार-सौ साल के बाद उनको ज़िन्दा कर दिया जाएगा। यह वाक्य स्पष्ट रूप से झूठा और ग़लत है ।आप फ़रमाते हैं यह चिल्ला इसलिए किया गया है ताकि वे लोग जो इस्लाम धर्म से मुनकिर हैं उनके सामने ख़ुदा तआला का एक ज़िन्दा निशान ज़ाहिर हो और जो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की करामत का इनकार कर रहे हैं उनको एक ताज़ा और ज़बरदस्त सबूत इस बात का मिल जाए कि अब भी ख़ुदा तआला इस्लाम और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समर्थन में अपने निशान ज़ाहिर करता है। वह इल्हामी शब्द जो इस पेशगोई के उद्देस्यों पर रोशनी डालते हैं यह हैं कि 'ख़ुदा ने यह कहा ताकि वे जो ज़िन्दगी के इच्छुक हैं मौत के पंजा से नजात पाएं और वे जो क़ब्रों में दबे पड़े हैं बाहर आएं'। अब अगर उन लोगों के दृष्टिकोण को सही समझ लिया जाए जो यह कहते हैं कि मुस्लेह मौऊद तीन चार-सौ साल के बाद आएगा तो इस वाक्य की व्याख्या इस तरह होती है कि यह पेशगोई इसलिए की गई है ताकि वे लोग जो आज ज़िन्दगी के इच्छुक हैं मरे रहें। चार-सौ साल के बाद उनकी नस्लों में से कुछ लोगों को ज़िन्दा कर दिया जाएगा। मगर क्या इस वाक्य को कोई शख़्स भी सही स्वीकार कर सकता है

दूसरे यह पेशगोई इसलिए की गई थी ताकि इस्लाम धर्म का सम्मान ज़ाहिर हो और कलामुल्लाह का मर्तबा लोगों पर स्पष्ट हो। इस वाक्य के साफ़ तौर पर यह अर्थ हैं कि इस्लाम धर्म का शरफ़ उस वक़्त लोगों पर ज़ाहिर नहीं। इसी तरह कलामुल्लाह का सम्मान उस वक़्त लोगों पर ज़ाहिर नहीं। मगर कहा यह जाता है कि ख़ुदा ने यह पेशगोई इसलिए की है ताकि इस्लाम धर्म का सम्मान और कलामुल्लाह का मर्तबा आज से तीन सौ साल के बाद या चार-सौ साल के बाद जब ये लोग भी मर जाऐंगे, उनकी औलादें भी मर जाएँगी और उनकी औलादें भी मर जाएँगी लोगों पर ज़ाहिर किया जाए। जब न पण्डित लेखराम होगा न मुंशी इन्द्रमन मुरादाबादी होगा ना इन की औलादें होंगी और न इन की औलादों की औलादें होंगी उस वक़्त इस्लाम धर्म का सम्मान और कलामुल्लाह का मर्तबा लोगों पर ज़ाहिर किया जाएगा। बताओ कि क्या कोई भी व्यक्ति अनुमानों को उचित समझ सकता है?' इन में कोई अक़्ल है

तीसरे आप ने फ़रमाया अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "यह पेशगोई इसलिए की गई है ताकि हक़ अपनी समस्त बरकतों के साथ आ जाए और झूठ अपनी तमाम नहूसतों के साथ भाग जाए। इस के अर्थ भी स्पष्ट हैं कि हक़ उस वक़्त कमज़ोर है और बातिल ग़लबा पर है। अल्लाह तआला चाहता है कि ऐसा निशान ज़ाहिर हो कि अक्ली और इलमी तौर पर इस्लाम के दुश्मनों पर हुज्जत पूरी हो जाए और वे लोग इस बात को मानने पर मजबूर हो जाएं कि इस्लाम हक़ है और इस के मुक़ाबला में जितने मज़हब खड़े हैं वे झूठे हैं।

चौथा उद्देश्य इस पेशगोई का यह वर्णन किया गया था कि ताकि लोग समझें कि मैं क़ादिर हूँ और जो चाहता हूँ करता हूँ। अब यह ध्यान देने वाली बात है कि लोग ख़ुदा तआला को इस अवस्था में किस तरह क़ादिर समझ सकते थे। अगर यह कह दिया जाता कि तीन सौ साल के बाद या चार सौ साल के बाद एक ऐसा निशान ज़ाहिर होगा जिस से तुम यह स्वीकार करने पर मजबूर हो जाओगे कि इस्लाम का ख़ुदा क़ादिर है। ऐसी पेशगोई को लेखराम किया महत्व दे सकता था या वे लोग जो उस वक़्त इस्लाम धर्म पर आरोप कर रहे थे, रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निशानों को झूठा क़रार दे रहे थे, इस्लाम को एक मुर्दा मज़हब क़रार दे रहे थे उन पर क्या हुज्जत हो सकती थी कि तुम चार सौ साल के बाद ख़ुदा तआला को क़ादिर समझने लग जाओगे चार-सौ साल के बाद पूरी होने वाली पेशगोई से वे लोग ख़ुदा तआला को किस तरह क़ादिर समझ सकते थे। वे तो यही कहते कि हम इन ज़बानी दावों को स्वीकार नहीं कर सकते कि चार सौ साल के बाद ऐसा हो जाएगा। यह तो हर कोई कह सकता है। बात तब है कि हमारे सामने निशान दिखाया जाए और इस्लाम के ख़ुदा का क़ादिर होना साबित किया जाए।' अत: यह निशान आप की ज़िन्दगी में पूरा होना था।

''पांचवां उद्देश्य यह वर्णन किया गया था कि ताकि वे यक़ीन लाएंगे कि मैं तुम्हारे साथ हूँ।' अर्थात अल्लाह तआला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ है। "अगर इस पेशगोई ने चार सौ साल के बाद ही पूरा होना था तो उस ज़माना के लोग यह किस तरह विश्वास कर सकते थे कि ख़ुदा तआला हज़रत मसीह मौऊद

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

अलैहिस्सलाम के साथ है।

छठा उद्देश्य यह वर्णन किया गया था कि ताकि उन्हें जो ख़ुदा के वजूद पर ईमान नहीं लाते और ख़ुदा और इस के धर्म और इस की किताब और इस के पाक रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इनकार और तक़ज़ीब की निगाह से देखते हैं एक खुली निशानी मिले। इस के अर्थ भी यही बनते हैं कि वे लोग जो मेरे ज़माना में इस्लाम का इन्कार कर रहे हैं।' अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माना में ''उनके सामने मैं यह पेशगोई करता हूँ कि उन्हें इस्लाम की सच्चाई की एक बड़ी खुली निशानी मिलेगी मगर मिलेगी चार सौ साल के बाद। जब मौजूदा ज़माना के लोगों बल्कि उनकी औलादों और उनकी औलादों में से भी कोई ज़िन्दा नहीं होगा अब यह भी कोई अक़्ल की बात नहीं है। "सातवीं आप ने वर्णन फ़रमाया कि यह पेशगोई इसलिए की गई है ताकि मुजरिमों की राह ज़ाहिर हो जाए और पता लग जाए कि वे झूठे हैं। चार सौ साल के बाद आने वाले वजूद से इस ज़माना के लोगों को कैसे पता लग सकता है कि वह (मुजरिम)झूठ बोल रहे थे।"

(अलमौऊद अनवारुल उलूम भाग 17 पृष्ठ 542 से 544)

अत: यह पेशगोई हज़रत मसीह मौऊद अलैहि वसल्लम की अपनी औलाद से सम्बन्धित थी और जैसा कि पेशगोई के शब्द हैं कि तेरे ही तुख़्म से तेरी ही ज़र्रयत और नस्ल का होगा। बाद की नस्ल में से नहीं। यह आप के बेटे के बारे में थी जो बड़ी शान से पूरी हुई और 52 साल तक हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि की ख़िलाफ़त एक रोशन चमकते निशान की तरह दुनिया पर ज़ाहिर हुई और आप के इलम तथा मार्फ़त का जो काम है इस के ग़ैर भी स्वीकार करते हैं जिसका विस्तार जमाअत के लिट्रेचर में मौजूद है अगर वर्णन करने लगूँ तो काफ़ी समय लग जाएगा।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अस्सानी रज़ि यह ऐलान फ़रमाते हुए कि मैं ही मुस्लेह मौऊद हूँ। पहले आप पर यह आरोप था कि आप ने ऐलान नहीं किया,1944 ई में आप ने ऐलान किया। ऐलान फ़रमाते वक़्त आप ने फ़रमाया कि

''मैं कहता हूँ और ख़ुदा तआला की क़सम खा कर कहता हूँ कि मैं ही मुस्लेह मौऊद की पेशगोई का मिस्दाक़ हूँ और मुझे ही अल्लाह तआला ने इन पेशगोइयों को पूरे करने वाला बनाया है जो एक आने वाले मौऊद के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहि वसल्लम ने फ़रमाईं। जो व्यक्ति समझता है कि मैंने झूठ से काम लिया है या इस बारे मैं झूठ और झूठ बोला है वह आए और इस मामला में मेरे साथ मुबाहला कर ले और या फिर अल्लाह तआला की मज़बूत अज़ाब वाली कसम खा कर ऐलान कर दे कि उसे ख़ुदा ने कहा है कि मैं झूठ से काम ले रहा हूँ। फिर अल्लाह तआला ख़ुद अपने आप अपने आसमानी निशानों से फ़ैसला फ़र्मा देगा कि कौन झूठा है और कौन सच्चा। जो आपके विरोधी थे और जमाअत के अंदर भी जो अलग होने वाले थे उनमें से कोई इस मुक़ाबला में नहीं आया। आप फ़रमाते हैं कि "और अगर वे कहते हैं कि ख़्वाब तो सच्चा है जैसा कि मिस्री साहिब ने कहा' (कि कुछ मुर्तद हो गए थे कि)"तो फिर उस की हक़ीक़त पर वे निबन्ध लिखें। मैं उनके इस निबन्ध का जवाब दूँगा और मैं यक़ीन रखता हूँ कि अगर वे इस मुक़ाबला में आए तो ऐसी मुँह की खाएँगे कि ज़माना तक याद रखेंगे। अत: अल्लाह तआला के फ़ज़ल और इस के रहम से वह पेशगोई जिसके पूरा होने की एक लम्बे समय तक से प्रतीक्षा की जा रही रही था अल्लाह तआला ने इस के बारे में अपने इलहाम और ख़बरों के द्वारा मुझे बता दिया है कि पेशगोई मेरे वजूद में पूरी हो चुकी है और अब इस्लाम के दुश्मनों पर ख़ुदा तआला ने कामिल हुज्जत कर दी है और उन पर यह बात स्पष्ट कर दी है कि इस्लाम ख़ुदा तआला का सच्चा मज़हब, मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा तआला के सच्चे रसूल और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ख़ुदा तआला के सच्चे भेजे हुए हैं। झूठे हैं वे लोग जो इस्लाम को झूठा कहते हैं। काज़िब हैं वो लोग जो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को काज़िब कहते हैं। ख़ुदा ने इस महान पेशगोई के द्वारा इस्लाम और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई का एक ज़िन्दा सबूत लोगों के सामने पेश कर दिया है।" आप फ़रमाते हैं "भला किस शख़्स की ताक़त थी कि वह 1886 ई में आज से पूरे 58 साल पहले अपनी तरफ़ से यह ख़बर दे सकता कि इस के यहाँ नौ साल के समय में एक लड़का पैदा होगा। वह जल्द जलद बढ़ेगा। वह दुनिया के किनारों तक शौहरत पाएगा। वह इस्लाम और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम दुनिया में फैलाएगा। वह उलूम ज़ाहिरी और बातिनी से भरा जाएगा। वह इलाही प्रताप के ज़हूर का कारण होगा और ख़ुदा तआला की क़ुदरत और इस की क़ुरबत और इस की रहमत का वह एक ज़िन्दा निशान होगा। यह ख़बर दुनिया का कोई इन्सान अपने पास से नहीं दे सकता था। ख़ुदा ने यह ख़बर दी और फिर उसी ख़ुदा ने इस ख़बर को पूरा किया इस इन्सान के द्वारा"(आप अपने बारे में फ़रमाते हैं कि इस ख़बर को पूरा किया इस इन्सान के द्वारा ''जिसके बारे में डाक्टर यह उम्मीद नहीं रखते थे कि वह ज़िन्दा रहेगा या लंबी उम्र पाएगा अर्थात हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि की शुरू की जो सेहत की हालत थी वह यह थी कि डाक्टर उम्मीद नहीं रखते थे कि ज़िन्दा रहेगा भी कि नहीं। बहरहाल फिर आगे आप अपने बारे में वर्णन करते हैं कि "मेरी सेहत बचपन में ऐसी ख़राब थी कि एक अवसर पर डाक्टर मिर्ज़ा याक़ूब बेग साहिब ने मेरे बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहि वसल्लम से कह दिया कि उसे टी बी हो गई है। किसी पहाड़ी स्थान पर उसे भिजवा दिया जाए। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहि वसल्लम ने मुझे शिमला भिजवा दिया मगर वहां जा कर मैं उदास हो गया और इस वजह से जल्दी ही वापस आ गया। अत: ऐसा इन्सान जिसकी सेहत कभी एक दिन भी अच्छी नहीं हुई इस इन्सान को ख़ुदा ने ज़िन्दा रखा और इसलिए ज़िन्दा रखा कि इस के द्वारा अपनी पेशगोइयों को पूरा करे और इस्लाम और अहमदियत की सच्चाई का सबूत लोगों के सामने उपलब्ध करे। फिर मैं वह व्यक्ति था जिसे उलूम ज़ाहिरी में से कोई इल्म हासिल नहीं था मगर ख़ुदा ने अपने फ़ज़ल से फ़रिश्तों को मेरी शिक्षा के लिए भिजवाया और मुझे क़ुरआन के इन अर्थों से आगाह फ़रमाया जो किसी इन्सान के वहम और सोच में भी नहीं आ सकते थे। वे इल्म जो ख़ुदा ने मुझे प्रदान फ़रमाया वह चश्मा रुहानी जो मेरे सीना में फूटा वह ख़्याली या काल्पनिक नहीं है बल्कि ऐसा विश्वसनीय और यक़ीनी है कि मैं सारी दुनिया को चैलेंज करता हूँ कि अगर इस दुनिया के पर्दा पर कोई व्यक्ति ऐसा है जो यह दावा करता हो कि ख़ुदा तआला की तरफ़ से उसे क़ुरआन सिखाया गया है तो मैं हर वक़्त उस से मुक़ाबला करने के लिए तैयार हूँ।" यह चैलेंज आप ने उस ज़माना में दिया था। आप फ़रमाते हैं "लेकिन मैं जानता हूँ आज दुनिया के पर्दा पर सिवाए मेरे और कोई व्यक्ति नहीं जिसे ख़ुदा की तरफ़ से क़ुरआन करीम का इल्म प्रदान फ़रमाया गया हो। ख़ुदा ने मुझे इल्म क़ुरआन बख़्शा है और इस ज़माना में उसने क़ुरआन सिखाने के लिए मुझे दुनिया का उस्ताद निर्धारित किया है। ख़ुदा ने मुझे इस उद्देश्य के लिए खड़ा किया है कि मैं मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और क़ुरआन करीम के नाम को दुनिया के किनारों तक पहुंचाऊं और इस्लाम के मुक़ाबला में दुनिया के समस्त झूठे धर्मों को हमेशा की शिकस्त दे दूं। दुनिया ज़ोर लगा ले, वह अपनी तमाम ताक़तों और संख्याओं को इकट्ठा कर ले, ईसाई बादशाह भी और उनकी हुकूमतें भी मिल जाएं, यूरोप भी और अमरीका भी इकट्ठा हो जाए, दुनिया की सारी बड़ी बड़ी मालदार और ताक़तवर कौमें इकट्ठी हो जाएं और वह मुझे इस मक़सद में असफल करने के लिए एक साथ हो जाएं फिर भी मैं ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूँ कि वे मेरे मुक़ाबला में नाकाम रहेंगी और ख़ुदा मेरी दुआओं और चेष्टाओं के सामने उनके समस्त मन्सूबों और तदबीरों और झूठों को मालिया-मेट कर देगा और ख़ुदा मेरे द्वारा से या मेरे शागिर्दों और अनुकरण करने वालों के द्वारा से इस पेशगोई की सच्चाई साबित करने के लिए रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम के सदका इस्लाम की इज़्ज़त को स्थापित करेगा और इस वक़्त तक दुनिया को नहीं छोड़ेगा जब तक इस्लाम फिर अपनी पूरी शान के साथ दुनिया में क़ायम न हो जाए और जब तक मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फिर दुनिया का ज़िन्दा नबी स्वीकार न कर लिया जाए।"

अत: यह कोई मामूली ऐलान नहीं था जैसा कि मैंने कहा आप का जो ख़िलाफ़त का 52 वर्षीय दौर है और इस का हर दिन जो है इस की शान को ज़ाहिर कर रहा है। फिर आप फ़रमाते हैं कि "हे मेरे दोस्तो मैं अपने लिए किसी इज़्ज़त का इच्छुक नहीं न जब तक ख़ुदा तआला मुझ पर ज़ाहिर करे किसी और अधिक उम्र का उम्मीदवार हूँ। यह भी नहीं कहता कि और अधिक उम्र मिले" हाँ ख़ुदा तआला के फ़ज़ल का मैं उम्मीदवार हूँ और मैं पूर्ण विश्वास रखता हूँ कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और इस्लाम की इज़्ज़त की स्थापना में और दोबारा इस्लाम को अपने पांव पर खड़े करने और मसीहीयत के कुचलने में मेरे पिछले या अगले कामों का इंशा अल्लाह बहुत कुछ हिस्सा होगा और वह एड़ियां जो शैतान का सिर कुचलेंगी और मसीहीयत का ख़ात्मा करेंगी उनमें से एक एड़ी मेरी भी होगी। इंशा अल्लाह तआला आप ने फ़रमाया। "मैं इस सच्चाई को निहायत खुले तौर पर सारी दुनिया के सामने पेश करता हूँ। यह आवाज़ वह है जो ज़मीन तथा आसमान के ख़ुदा की आवाज़ है। यह इच्छा वह है जो ज़मीन तथा आसमान के ख़ुदा की इच्छा है। यह सच्चाई नहीं टलेगी नहीं टलेगी और नहीं टलेगी। इस्लाम दुनिया पर ग़ालिब आकर रहेगा इंशा अल्लाह तआला।" मसीहीयत दुनिया में पराजित हो कर रहेगी। अब

कोई सहारा नहीं जो ईसाईयत को मेरे हमलों से बचा सके। ख़ुदा मेरे हाथ से इस को शिकस्त देगा और या तो मेरी ज़िन्दगी में ही इस को इस तरह कुचल कर रख देगा कि वह सिर उठाने की भी ताकत नहीं रखेगी और या फिर मेरे बोए हुए बीज से वे वृक्ष पैदा होगा जिसके सामने ईसाईयत एक ख़ुशक झाड़ी की तरह मुरझा कर रह जाएगी और दुनिया में चारों तरफ़ इस्लाम और अहमदियत का झंडा इंतिहाई बुलंदियों पर उड़ता हुआ दिखाई देगा फिर आप फ़रमाते हैं कि "मैं इस अवसर पर जहां आप लोगों को यह बिशारत देता हूँ कि ख़ुदा तआला ने आपके सामने हज़रत मसीह मौऊद अलैहि वसल्लम की इस पेशगोई को पूरा कर दिया जो मुस्लेह मौऊद के साथ सम्बन्ध रखती थी वहां मैं आप लोगों को इन ज़िम्मेदारियों की तरफ़ भी ध्यान दिलाता हूँ।" और ये ज़िम्मेदारियाँ आज भी हमारी हैं "जो आप लोगों पर फर्ज़ होती हैं आप लोग जो मेरे इस ऐलान को स्वीकार करे वाले हैं। जो तसदीक़ कर रहे हैं कि मैं मुस्लेह मौऊद हूँ "आपका प्रथम कर्तव्य यह है कि अपने अंदर तबदीली पैदा करें और अपने ख़ून का आख़िरी क़तरा तक इस्लाम और अहमदियत की फ़तह और सफलता के लिए बहाने के लिए तैयार हो जाएं। बेशक आप लोग ख़ुश हो सकते हैं।" पेशगोई का इज़हार करने के लिए ख़ुशी की जाती है आप ख़ुश हो सकते हैं "कि ख़ुदा ने इस पेशगोई को पूरा किया बल्कि मैं कहता हूँ कि आपको निसन्देह ख़ुश होना चाहिए क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहि वसल्लम ने ख़ुद लिखा है कि तुम ख़ुश होउ और ख़ुशी से उछलो।" इस पेशगोई के बाद, उस के बाद,आपने फ़रमाया ख़ुशी से उछलो "कि इस के बाद अब रोशनी आएगी।" हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने फ़रमाया "पस मैं तुम्हें ख़ुश होने से नहीं रोकता। मैं तुम्हें उछलने कूदने से नहीं रोकता। बेशक तुम ख़ुशियां मनाओ और ख़ुशी से उछलो और कोदू लेकिन मैं कहता हूँ कि इस ख़ुशी और उछल कूद में तुम अपनी ज़िम्मेदारियों को भुला मत दो जिस तरह ख़ुदा ने मुझे रोया में दिखाया था कि मैं तेज़ी के साथ भागता चला जा रहा हूँ और ज़मीन मेरे पैरों के नीचे सिमटती जा रही है इसी तरह अल्लाह तआला ने इल्हाम के द्वारा मेरे बारे में यह ख़बर दी है कि मैं जल्द जल्द बढ़ूँगा। अत: मेरे लिए यही मुक़द्दर है कि मैं तीव्रता और तेज़ी के साथ अपने क़दम तरक्कियों के मैदान में बढ़ाता चला जाऊं। मगर इस के साथ ही आप लोगों पर भी यह फ़र्ज़ लागू होता है कि अपने क़दम को तेज़ करें और अपनी सुस्ती को छोड़ दें। मुबारक है वे जो मेरे क़दम के साथ अपने क़दम को मिलाता और तीव्रता के साथ तरक्कियों के मैदान में दौड़ता चला जाता है और अल्लाह तआला रहम करे उस शख़्स पर जो सुस्ती और ग़फ़लत से काम लेकर अपने क़दम को तेज़ नहीं करता और मैदान में आगे बढ़ने की स्थान पर मुनाफ़िक़ों की तरह अपने क़दम को पीछे हटा लेता है।" आप फ़रमाते हैं "अगर तुम तरक़्क़ी करना चाहते हो, अगर तुम अपनी ज़िम्मेदारियों को सही तौर पर समझते हो तो क़दम से क़दम और कन्धा से कन्धा मेरे साथ बढ़ते चले आओ ताकि हम कुफ्र के दिल में मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडा गाड़ दें और झूठ को हमेशा के लिए संसार से समाप्त कर दें और इंशा अल्लाह ऐसा ही होगा। ज़मीन और आसमान टल सकते हैं मगर ख़ुदा तआला की बातें कभी टल नहीं सकतीं।"

(अल्मौऊद, अनवारुल उलूम भाग 17 पृष्ठ 645 से 649)

अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि हम काम करने वाले हूँ सिर्फ़ जलसा मुस्लेह मौऊद मनाने वाले ही ना हूँ। इस्लाम के पैग़ाम को दुनिया में फैलाने वाले हूँ और सिर्फ इसी बात पर ख़ुश ना हो जाएं कि हम जलसे मना रहे हैं हक़ीक़ी तौर पर हम इस मिशन को आगे बढ़ाने वाले हूँ, इस काम को आगे बढ़ाने वाले हूँ जिसके लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने भेजा था और जिसके लिए आपने बेशुमार पीशगोईयां भी फ़रमाएं और मुस्लेह मौऊद की पेशगोई भी उनमें से एक पेशगोई है

आपके कामों के सिलसिले में भी सिर्फ एक बात का यहां संक्षिप्त ज़िक्र मैं कर देता हूँ कि पेशगोई में शब्द हैं कि उलूम ज़ाहरी बातिनी से भर दिया जाएगा और आपके जो काम हैं उनकी एक झलक जो है मैं आपको बता देता हूँ। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो की किताबें लैक्चरों और तक़रीरों का मजमूआ अनवारुल उलूम के नाम से प्रकाशित हो रहा है। बहुत सारी जिल्दें प्रकाशित हो चुकी हैं। जो उर्दू पढ़ना जानते हैं उनको पढ़ना चाहिए वैसे कुछ किताबों के अंग्रेज़ी अनुवाद भी हो रहे हैं। इस वक़्त अनवारुल उलूम की 26 जिल्दें प्राकशित हो चुकी हैं इन 26 जिल्दों में कुल 670 किताबें लैक्चरज़ और तक़रीर आ चुकी हैं। ख़ुत्बाते महमूद की इस वक़्त तक कुल 39 जिल्दें प्रकाशित हो चुकी हैं जिन में 1959 ई तक के ख़ुत्बे प्रकाशित हो गए हैं। इन जिल्दों में 2367 ख़ुत्बे शामिल हैं। तफ़सीर सग़ीर 1071 पृष्ठों पर आधारित है। तफ़सीर कबीर 10 जिल्दों पर आधारित है इस में क़ुरआन करीम की 59 सूरतों की तफ़सीर वर्णन की गई है। तफ़सीर कबीर की दस जिल्दों के पृष्ठों की किल संख्या 5907 है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के दर्सुल क़ुरआन जो कि अप्रकाशित तफ़सीर थे वह रिसर्च सेल ने कम्पोज़ करने के बाद फ़ज़्ले उम्र फ़ाउंडेशन के सपुर्द कर दिए हैं। इस के 3094 पृष्ठ हैं। इस के बाद अब रिसर्च सेल को मैंने कहा था कि हज़रत मुस्लेह मौऊद की तहरीरों और फर्मो दात से तफ़सीर क़ुरआन इकट्ठी की जाए जिस पर काम शुरू किया गया है और अब तक नौ हज़ार 9000 पृष्ठों पर आधारित तफ़सीर ली जा चुकी है और इस पर बहुत अधिक काम जारी है

यह तो है एक संक्षिप्त जायज़ा आप के कामों का लेकिन इसी जायज़े को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहेमहुल्लाह ने अपने वक़्त में भी अपने एक ख़ुत्बा में एक वक़्त वर्णन फ़रमाया था। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस का वह उद्धरण भी मैं पढ़ देता हूँ। आप फ़रमाते हैं कि

"ख़ुदा तआला ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के बारे में कहा था कि "वह उलूम ज़ाहरी तथा बातनी से भरा जाएगा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस इस के बारे में कहते हैं कि मैंने बहुत से विस्तार जमा किए थे लेकिन इस वक़्त मैं सिर्फ वह नक़्शा ही पेश कर सकता हूँ जो मैंने इस उद्देश्य के लिए तैयार करवाया है और वह यह है हज़ूर की एक तफ़सीर तो तफ़सीर कबीर है जो ख़ुद इतनी अजीब तफ़सीर है कि जिस शख़्स ने भी ग़ौर से इस के किसी एक हिस्सा को पढ़ा होगा वह यह बात स्वीकार करने पर मजबूर होगा कि अगर दुनिया में कोई ख़ुदा रसीदा बुज़ुर्ग पैदा होता और वह सिर्फ यह हिस्सा क़ुरआन कराम का तफ़सीरी नोटों के साथ प्रकाशित कर देता तो यह उस को दुनिया की निगाह में बुज़ुर्ग तरीन इन्सानों में से एक इन्सान बनाने के लिए काफ़ी था लेकिन इस पर ही बस नहीं। क़ुरआन करीम पर और बहुत सी किताबें लिखीं और मेरा ख़्याल है कि हुज़ूर ने सिर्फ क़ुरआन करीम की तफ़सीर पर ही आठ दस हज़ार पृष्ठ लिखे हैं ,तफ़सीर कबीर की 11 जिल्दें भी उनमें शामिल हैं। कलाम के ऊपर हुज़ूर ने 10 किताबें और रसाले लिखे। रूहानियत, इस्लामी अख़लाक़ और इस्लामी अक़ीदों पर 31 किताबें और रसाले तहरीर फ़रमाए। सीरत सवानिह पर 13 किताबें तथा रसाले लिखे। तारीख़ पर चार किताबें तथा रसाले। फ़िक़्ह पर तीन किताबें तथा रसाले। भारत के विभाजन से पहले सियासत पर पच्चीस किताबें और रसाले। भारत के विभाजन तथा पाकिस्तान की स्थापना के बाद 9 किताबें और रसाले। सियासत कश्मीर पर 15 किताबें और रसाले। तहरीक अहमदियत के विशेष मस्लों और तहरीकों पर एक कम सौ किताबें और रसाले अर्थात निनानवे। इन सब किताबों तथा रसालों का जोड़ 225 बनता है तो जैसा कि इस वक़्त शायद आप को मालूमात भी पूरी न दी गई हूँ , अब ज़्यादा मज़ीद मालूमात हैं जैसा कि मैंने पहले वर्णन किया। बहरहाल आप फ़रमाते हैं तो जैसा कि फ़रमाया था इल्हाम में कि वह उलूम ज़ाहिरी तथा बातनी से भरा जाएगा उन पर एक नज़र डाल लें तो उनमें उलूम इज़ाहरी भी नज़र आते हैं और उलूम अबतानी भी नज़र आते हैं और फिर मज़ा यह कि जब भी आप ने कोई किताब या रिसाला लिखा हर शख़्स ने यही कहा कि इस से बेहतर नहीं लिखा जा सकता। सियासत में जब आप ने क़ियादत संभाली या जब भी आप ने सियासत के बारे में क़ाइदाना मश्वरे दिए, बड़े से बड़े विरोधी भी आप की बेमिसाल क़ाबिलीयत को स्वाकीर करने पर मजबूर हो गए। अत: हुज़ूर के उलूम ज़ाहरी तथा बातिनी के भरे होने से बारे में एक बड़ा विस्तार है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अस्सालिस कहते हैं कि इस के हज़ारवें हिस्सा में भी मैं नहीं जा सकता। सिर्फ एक सरसरी सी चीज़ आपके सामने रख दी है और फिर इसी पर ख़त्म करता हूँ।"

(उद्धरित मासिक अन्सारुल्लाह हज़रत मुस्लेह मौऊद नम्बर मई जून जुलाई 2009 ई पृष्ठ 64-65)

अल्लाह तआला की हज़ारों हज़ार रहमतें हों आप पर और हर आन अल्लाह तआला आप के दर्जात बुलंद फ़रमाता रहे और हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहि वसल्लम के इस बेटे की तरह इस्लाम के प्रकाशन का दर्द अपने दिल में भी पैदा करने वाले हों और इस्लाम की सेवा के लिए हम हर वक़्त कमर बांधे खड़े हों और उन लोगों में शामिल हों जो धर्म की ख़िदमत करने वाले हों न कि इन लोगों में जिनके बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने फ़रमाया था कि

''आपके वक़्त में यह सिलसिला बदनाम न हो।''

(कलाम महमूद पृष्ठ 97)

अल्लाह तआला न करे कि हम यह सिलसिला बदनाम करने वाले हूँ बल्कि

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 26 March 2020 Issue No.13

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

ख़िदमत में आगे से आगे बढ़ते चले जाने वाले हों।

नमाज़ों के बाद में दो जनाज़े भी पढ़ाऊंगा। ग़ायब जनाज़ा हैं। एक आदरणीया मर्यम अलज़बैथ साहिबा का है जो आदरणीय मलिक उम्र अली खोखर साहिब रईस मुल्तान और भूतपूर्व अमीर मुल्तान की दूसरी पत्नी थीं। 86 साल की उम्र में एक दुर्घटना के नतीजा में उनकी वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना लिल्लाह राजेऊन। यह और उनकी बेटी लिफ़्ट में थीं। वहां दुर्घटना हुई और लिफ़्ट की ख़राबी की वजह से उनकी बेटी भी इस में ज़ख़्मी हुई हैं। हस्पताल में हैं। बहरहाल यह survive नहीं कर सकीं। यह जर्मन औरत थीं, हैमबर्ग में रहती थीं और 1934 ई का उनका जन्म है। 1952 ई में उन्होंने बैअत की और मलिक उम्र अली खोखर साहिब के साथ उनकी शादी हुई। फिर यह पाकिस्तान स्थानान्तरित हो गईं। फिर उनकी वफ़ात के बाद जर्मनी आ गईं। फिर वापस पाकिस्तान चली गईं। वसीयत के बरकत वाले निज़ाम में यह शामिल थीं। नमाज़ रोज़ा की यह पाबन्द थीं। वक़्त पर नमाज़ पढ़ने का बड़ा ध्यान रखती थीं और सूरज डूबने और सूरज उदय होने के वक़्तों का बड़ा हिसाब रखा करती थीं। क़ुरआन करीम की तिलावत भी बाक़ायदगी से करने वाली थीं। बाक़ायदगी से रोज़े रखा करती थीं। आपके बच्चों ने यह वर्णन किया है कि हमारे अब्बा जान से उनकी शादी 1952 ई में हुई। इस वक़्त के मुरब्बी सिलसिला जर्मनी आदरणीय अब्दुल-लतीफ़ साहिब ने बैअत करवा कर निकाह पढ़वाया। शादी के बाद पाकिस्तान आ गईं और बच्चे कहते हैं फिर हमारी माता सय्यदा सय्यदा बेगम साहिबा जो पहली माता थीं। आदरणीय मलिक उम्र अली साहिब की पत्नी थीं जो हज़रत मीर मुहम्मद इसहाक़ साहिब रज़ि की बेटी थीं वह उनके साथ मिल के रहने लगीं और मलिक साहिब की जो बड़ी पत्नी सय्यदा बेगम साहिबा थीं उनका बड़ा सम्मान किया करती थीं। पाकिस्तान आकर उन्होंने नमाज़ और क़ुरआन करीम पढ़ना शुरू किया। इस के लिए एक पढ़ाने वाले का उनके लिए प्रबन्ध किया गया और सबसे पहले उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जो किताब पढ़ी वह "इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी " थी। पाकिस्तान रहने की वजह से उर्दू और सरायकी भाषा भी कुछ बोल लेती थीं और समझती भी ठीक तरह थीं। उनके दो बच्चे थे एक बेटा और एक बेटी। जब उनकी शादियों के फ़ैसला का वक़्त आया तो मलिक साहिब की जो बड़ी पत्नी सय्यदा बेगम साहिबा थीं उन पर फ़ैसला छोड़ा कि आप जहां बेहतर समझती हैं, जो रिश्ते बेहतर हूँ उनकी शादियां कर दें। उनके गर्भ से एक बेटा है तारिक़ अली और बेटी हैं ताहिरा। अल्लाह तआला मरहूमा से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए दर्जात बुलंद फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा है प्रिय जाहिद फ़ारस अहमद का जो 12 साल की उम्र में वफ़ात पा गया है। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। यह तारिक़ नूरी और अती उलअज़ीज़ ख़दीजा का बेटा था और प्रिय ज़ाहिद के नाना फ़ारूक़ अहमद ख़ान हैं जो हज़रत नवाब अमतुल हफ़ीज़ बेगम साहिबा के सबसे बड़े पोते हैं। उन्होंने भी लिखा है और उन के साथी जो लड़के थे और बहुत सारे लोगों ने भी मुझे लिखा कि बड़ी नुमायां विशेषताओं का यह बच्चा था। बहुत सुलझा हुआ, ख़िलाफ़त के साथ गहरी मुहब्बत रखने वाला और मुझे बाक़ायदगी से यह ख़त लिखा करता था। उसने हमेशा इम्तिहान हुआ या जो दूसरी बातें हुईं हमेशा मुझे ख़त लिखा। अपने अहमदी होने पर गर्व था और पाकिस्तान में अहमदी होना, स्कूल में भी बताना यह बड़ी बात है और यह ख़ुत्बे बाक़ायदा सुना करता था। वाकिफ नौ था। क्लासों में भी शामिल होने वाला था। अपनी उम्र के लिहाज़ से वक़्फ़ -नौ का निसाब भी इस को सारा याद था। क़सीदा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का भी याद कर रहा था। जमाअत के चन्दों में तहरीक जदीद और वक़्फ़ जदीद में जो इस पर लागू थे उन में बाक़ायदगी से ख़ुद ही हिस्सा लेता था। नमाज़ सैंटर में बाक़ायदगी से नमाज़ पढ़ने जाना, बाजमाअत नमाज़ की तरफ़ ध्यान थी। फ़ज्र के बाद बाक़ायदगी से तिलावत किया करता था और इस के साथियों ने भी लिखा है कि इस की बड़ी अच्छी आवाज़ थी

सातवीं जमाअत का छात्र था और घर में जनरेटर में आग लगने की वजह से इस को भी आग लगी और ज़ख़्मी हुआ। ठीक हो रहा था। डाक्टरों ने पहले यही बताया कि यह ठीक हो रहा है ज़ख़्म भर रहे हैं लेकिन फिर कोई इन्फ़ैक्शन ज़्यादा बढ़ गई। इस हस्पताल की इन्फ़ैक्शन हुई या क्या वजह हुई बहरहाल इस इन्फ़ैक्शन की वजह से फिर बाक़ी अंगों पर भी असर होना शुरू हुआ और फिर हस्पताल में इस की वफ़ात हो गई। मरहूम बच्चा है यक़ीनन इस उम्र के बच्चे मासूम बच्चे हैं जन्नती तो होते हैं। अल्लाह तआला उस को अपने प्यारों की क़ुरबत में जगह दे। और इस की माँ ने ही इस को पाला है। बाप ने तो कभी ज़िन्दगी भर नहीं पूछा। अलग हो गया था और माँ और नाना नानी उस को पालते रहे हैं। अल्लाह तआला उनको भी सब्र और हौसला दे और जो उनके लिए बहुत बड़ा सदमा है इस को बर्दाश्त करने की तौफ़ीक़ दे और बच्चे की नानी ताहिरा बेगम जो मर्यम बेगम साहिबा की बेटी हैं जैसा कि मैं ने कहा लिफ़्ट के हादिसा में वे भी ज़ख़्मी हुई हैं, हस्पताल में हैं अल्लाह तआला उन को भी सेहत तथा सलामती वाली ज़िन्दगी प्रदान फ़रमाए और उनको अपने बच्चों की आइन्दा हमेशा ख़ुशियां दिखाए।

ज़ाहिद की जो माता हैं उस के कज़न तारिक़ अली खोखर का बेटा कहता है कि मैं वहां हस्पताल में था जाहिद की एक अच्छी आदत ये थी कि जब हस्पताल में था तो बीमारी की हालत में भी कई बार कभी बेहोशी की हालत छा जाती थी तो हर वक़्त मुझ से पूछता था कि मैंने नमाज़ पढ़ी है कि नहीं या ग़नूदगी होती थी और मैं कहता नहीं पढ़ी तो फ़ौरन लेटे लेटे नमाज़ पढ़ना शुरू कर देता था।

अल्लाह तआला जैसा कि मैं ने कहा उस के दर्जात बुलंद करता रहे और उनकी माँ और नाना नानी को भी सब्र और हौसला और हिम्मत प्रदान फ़रमाए।

(अलफ़ज़ल इंटरनेशनल 13 मार्च 2020 पृष्ठ 5 से 9)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

जहन्नुम है जिसमें न मरेगा और न ज़िन्दा रहेगा। यह कैसी साफ़ बात है। असल लज़्ज़त ज़िंदगी की राहत और ख़ुशी ही में है बल्कि उसी हालत में वह ज़िन्दा माना जाता है जबकि हर तरह के अमन और आराम में हो। अगर वह किसी दर्द जैसे क़ूलंज या दाँत के दर्द ही में पीड़ित हो जाए तो वह मुर्दों से बदतर होता है और हालत ऐसी होती है कि न तो मुर्दा ही होता है और न ज़िन्दा ही कहला सकता है। अत: उसी पर क़ियास कर लो कि जहन्नुम के दर्दनाक अज़ाब में कैसी बुरी हालत होगी।

मुजरिम वह है जो अपनी ज़िन्दगी में ख़ुदा तआला से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर ले

मुजरिम वह है जो अपनी ज़िन्दगी में ख़ुदा तआला से अपना सम्बन्ध काट ले। इस को तो हुक्म था कि वह ख़ुदा तआला के लिए हो जाता और सच्चों के साथ हो जाता मगर वह हवस का बंदा बन कर रहा और बुरों और ख़ुदा और रसूल के दुश्मनों से मुवाफ़िक़त करता रहा। मानो उसने अपने व्यवहार से दिखा दिया कि ख़ुदा तआला से विच्छेद कर लिया है। यह एक अल्लाह की आदत है कि इन्सान जिधर क़दम उठाता है इस के विपरीत तरफ से वह दूर होता जाता है। वह ख़ुदा तआला की तरफ़ से अलग हो कर अगर नफ़सानी इच्छाओं का बंदा होता है तो ख़ुदा इस से दूर होता जाता है और जैसे-जैसे इधर सम्बन्ध बढ़ते हैं उधर कम होते हैं। यह प्रसिद्ध बात है कि दिल रा बदल रहे अस्त। अत: अगर ख़ुदा तआला से व्यावहारिक तौर पर बेज़ारी ज़ाहिर करता है तो समझ ले कि ख़ुदा तआला भी इस से बेज़ार है और अगर ख़ुदा तआला से मुहब्बत करता है और पानी की तरह उस की तरफ़ झुकता है तो समझ ले कि वह मेहरबान है। मुहब्बत करने वाले से अधिक अल्लाह तआला उस को मुहब्बत करता है। वह वह ख़ुदा है कि अपने प्यारों पर बरकतें नाज़िल करता है और उनको महसूस करा देता है कि ख़ुदा उनके साथ है। यहां तक कि उनके कलाम में ,उनके होंठों में बरकत रख देता है और लोग उस के कपड़ों और इस की हर बात से बरकत पाते हैं। उम्मते मुहम्मदिया में इस का स्पष्ट सबूत इस वक़्त तक मौजूद है कि जो ख़ुदा के लिए होता है ख़ुदा उस का हो जाता है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 125 से 127 प्रकाशन कादियान)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad